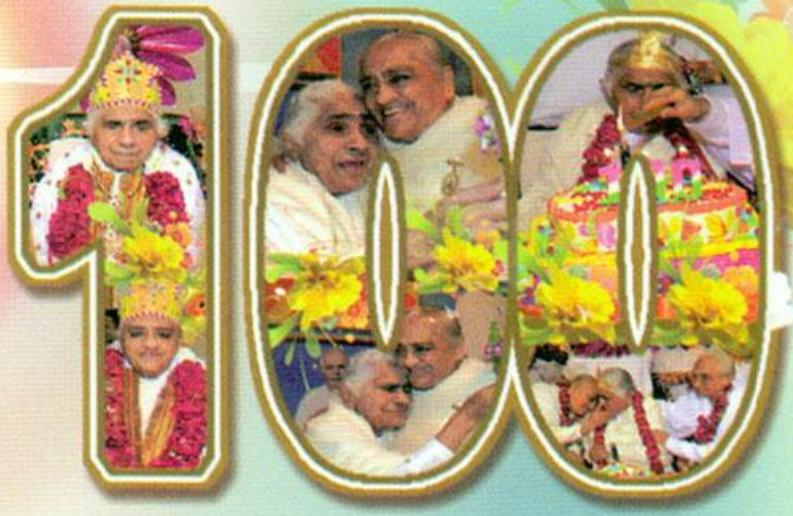

दिव्य गुण रत्नों से आलोकित प्रेरणा पुंज

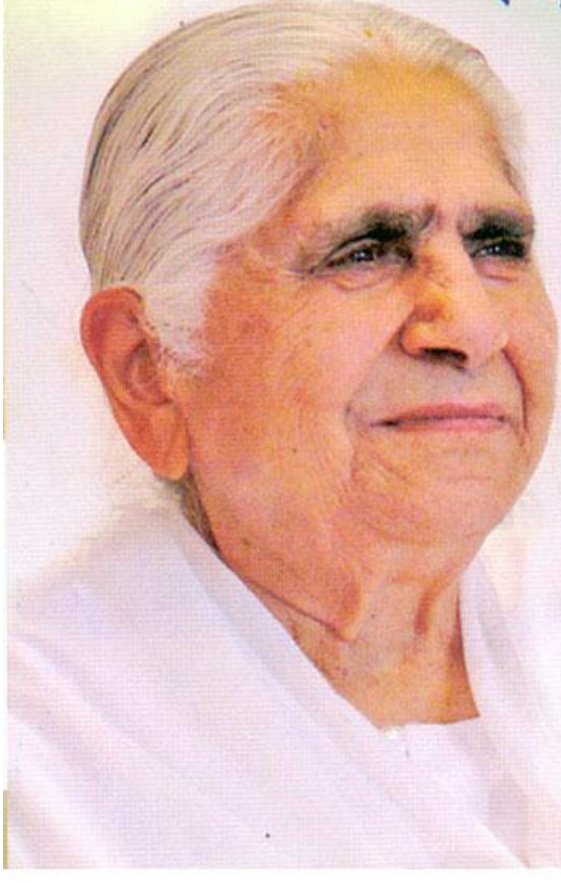

दादी जानकी

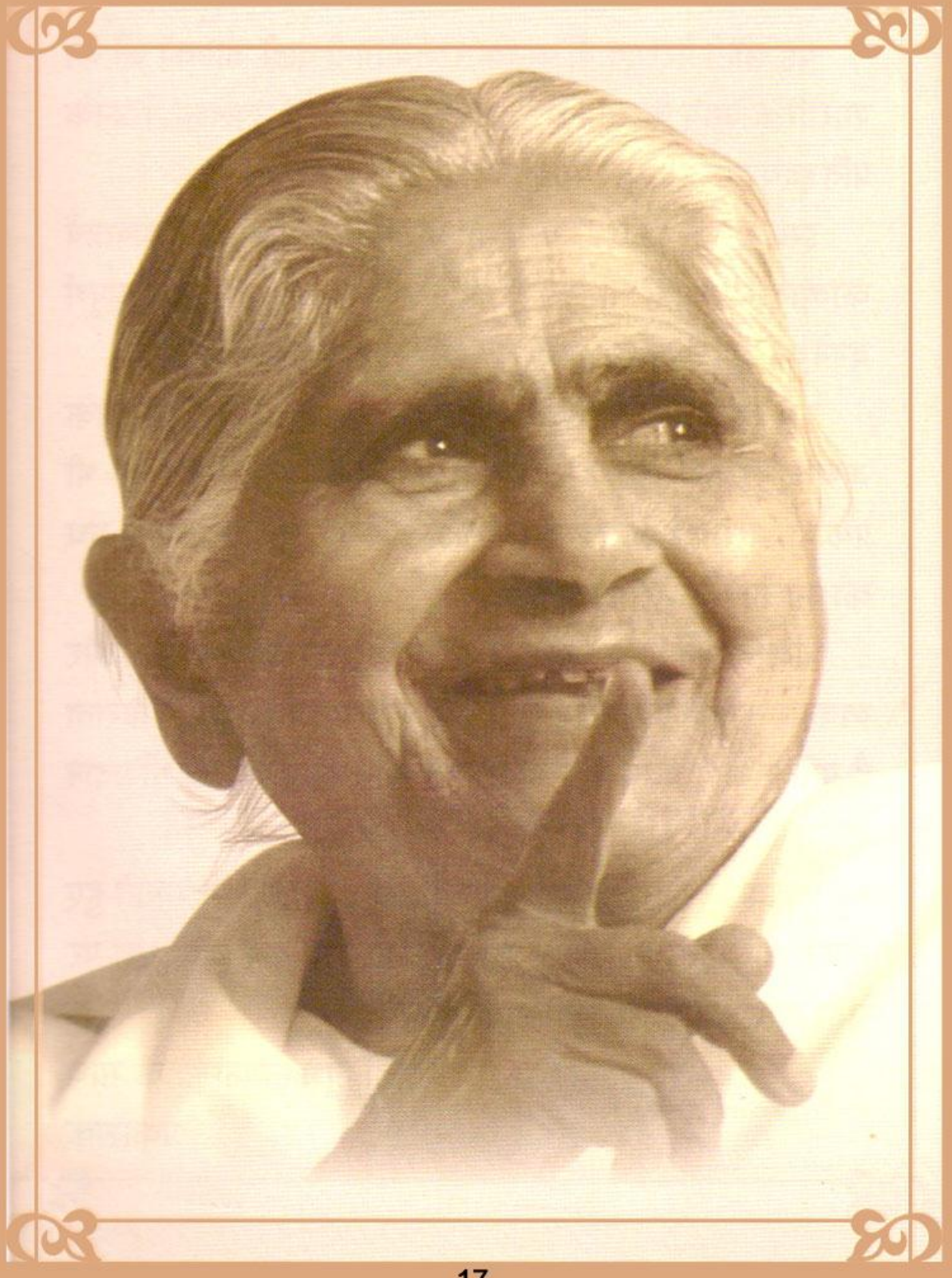

यह छोटी प्रेरणादायी पुस्तक राजयोगिनी दादी जानकी जी की शारीरिक आयु के 100 वर्ष पूर्ण होने के उत्सवी उपलक्ष्य में उनके प्रति हृदय का अगाध सम्मान-सत्कार है।

इस पुस्तक में दादी जानकी जी के 100 गुण व विशेषतायें काव्यात्मक रूप में शब्दबद्ध हैं जो उन्होंने साकार बाप समान संपूर्ण बनने की अपनी आध्यात्मिक यात्रा में आत्मसात किये।

यह पुस्तक केवल उनके आंतरिक गुण ही नहीं अपितु उनके अथक पुरुषार्थ, दृढ़ इच्छाशक्ति और श्रेष्ठ मन:स्थिति पर भी प्रकाश डालती है जिसके द्वारा वे दीपस्तंभ बन दूसरों के जीवन-पथ को आलोकित करती रही हैं।

पवित्रता की दिव्य आभा से आलोकित उनका व्यक्तित्व और व्यवहार न केवल ईश्वरीय गुणों और शक्तियों की अनुभूति कराता है बल्कि आगे बढ़ने के लिए हिम्मत और उमंग के पंख भी प्रदान करता है।

पुस्तक में संकलित गुण-मोतियों को हम जीवन में समाते हुए अपने आध्यात्मिक विकास की गति को तीव्र करें और धरा पर सुंदर रामराज्य के स्वप्न को साकार करें!

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

प्रकाशक

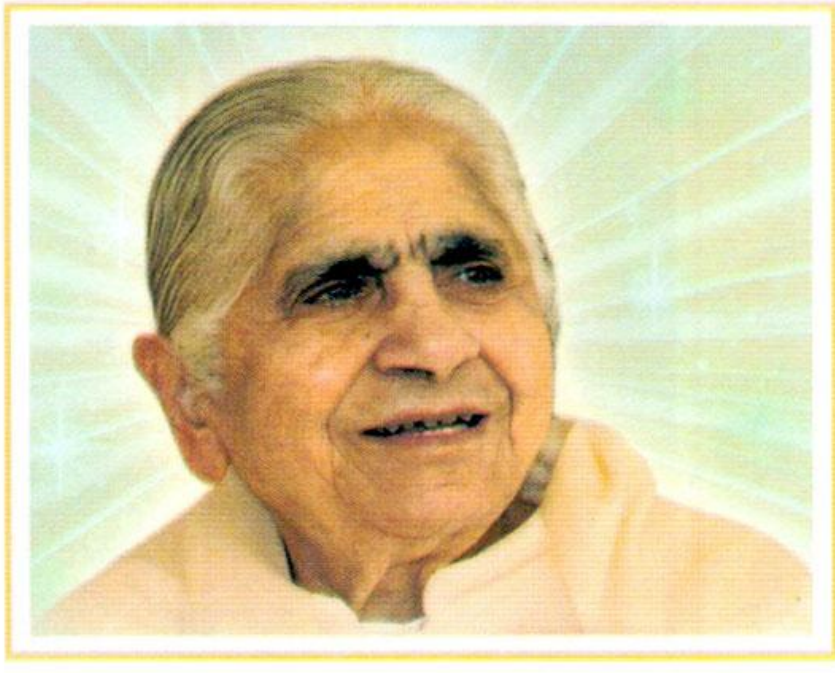

आपके आभामय व्यक्तित्व का प्रकाश
चहुँ ओर फैला रहा आशा और विश्वास

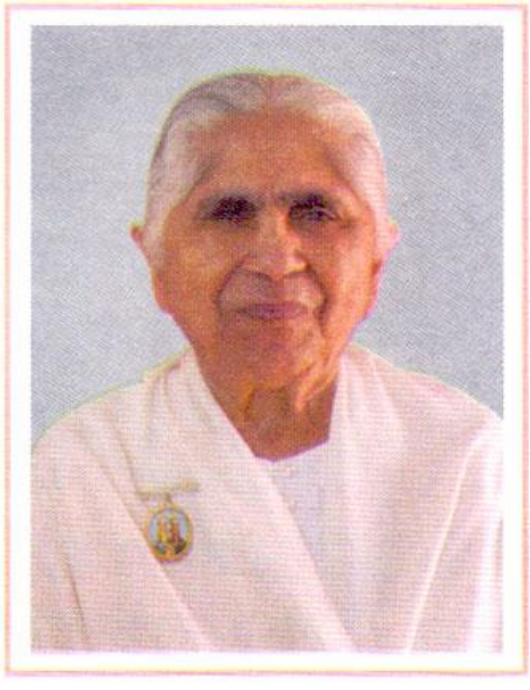

पूर्वज और पूज्य आत्मा आप कितने महान

अष्ट रत्नों में एक दादी जी गुणों की खान

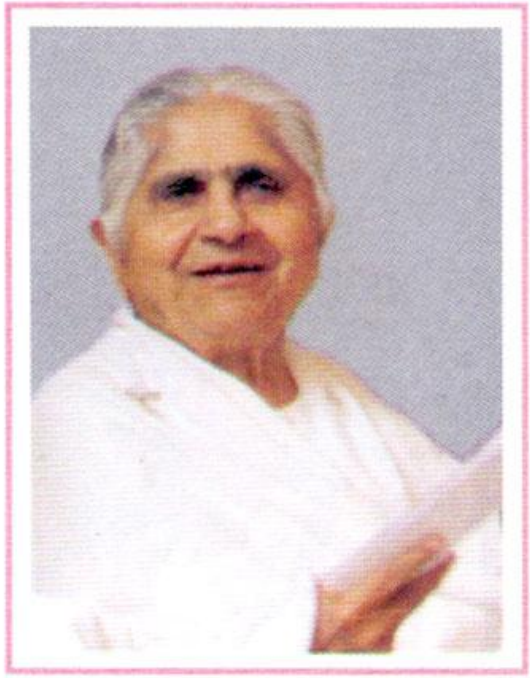

मुरली से आपका बेहद प्यार
एक दिन में पढ़ते कई-कई बार

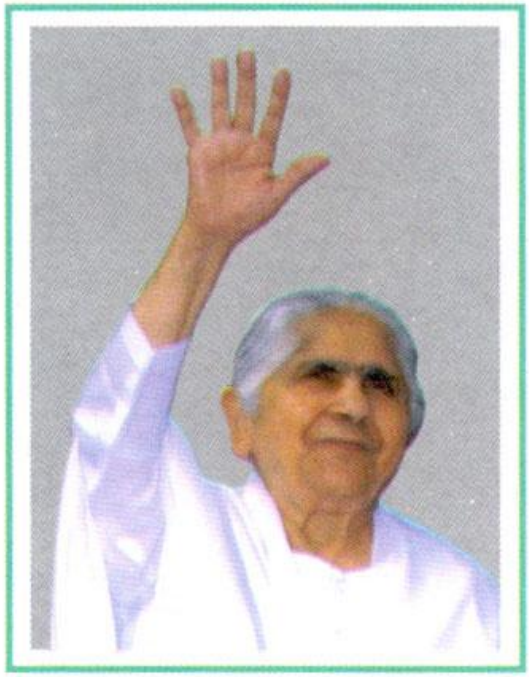

शरीर की थकावट से नहीं कभी मजबूर
सदा आपको पाते उमंग-उत्साह से भरपूर

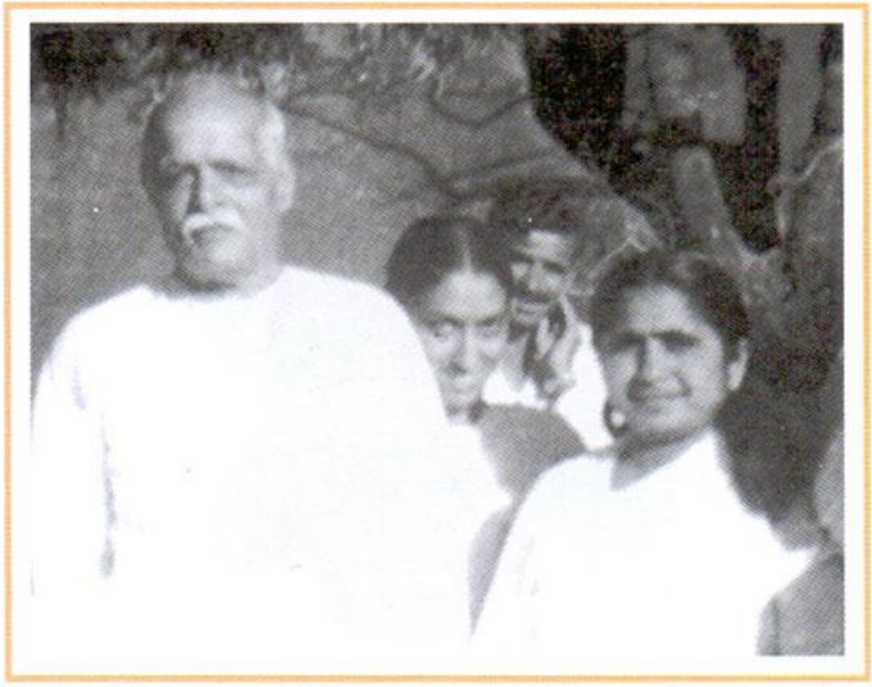

आपके मन-मस्तिष्क में हमेशा
एक बाबा और नहीं कोई दूजा

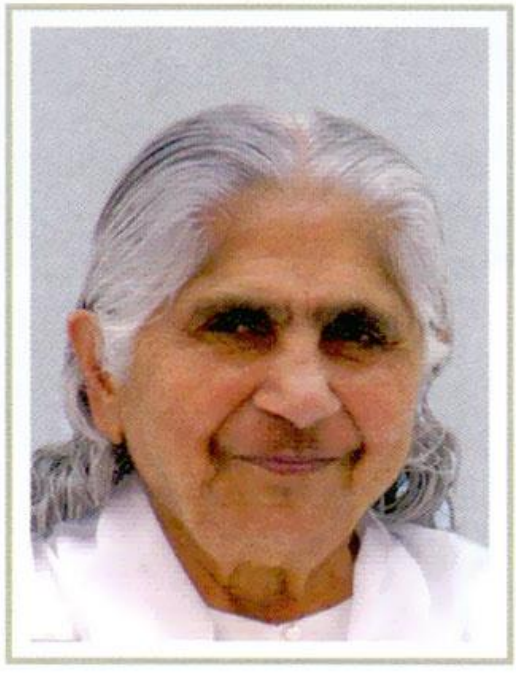

आपका विवेक और अंतर्दृष्टि भरते आत्मविश्वास की शक्ति

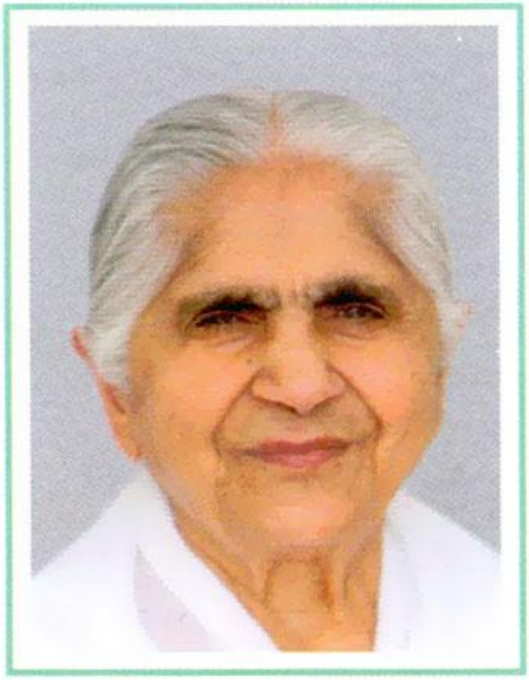

बहुत प्रिय आपको सत्यता, स्वच्छता और सादगी

सूरत से आपके झलकती सूरत बाप की

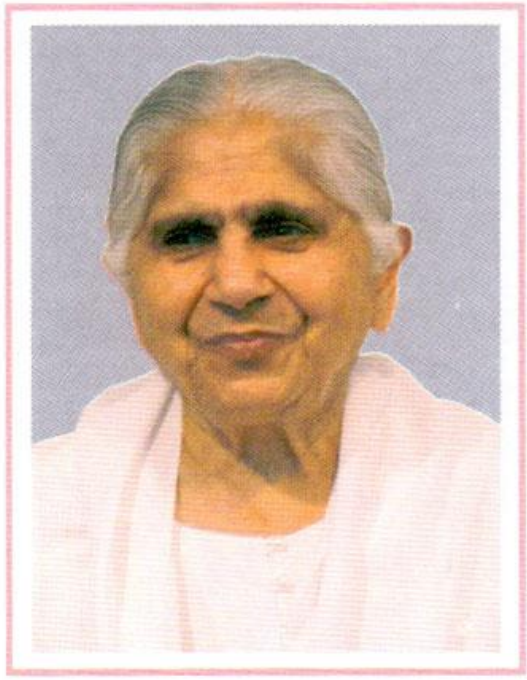

स्वच्छ, शांत और स्थिर आपका मन

छलकता रहता सर्व के लिए स्नेह और अपनापन

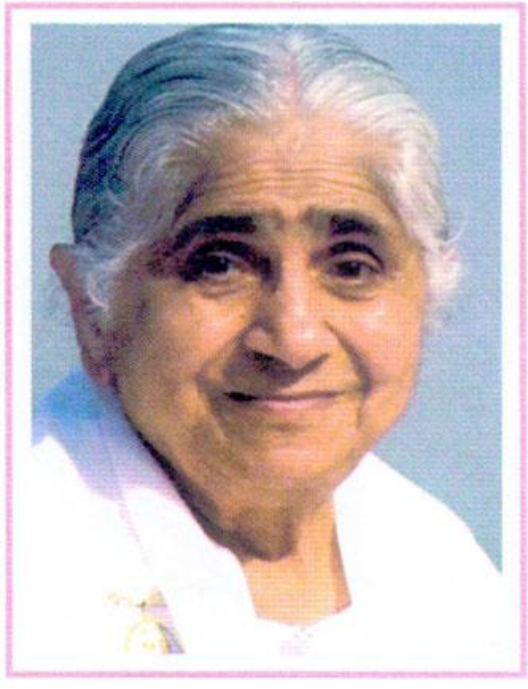

शक्तिशाली स्थिति ऐसी आपकी हे विदेही
मुक्त गगन के पंछी आप सबके स्नेही

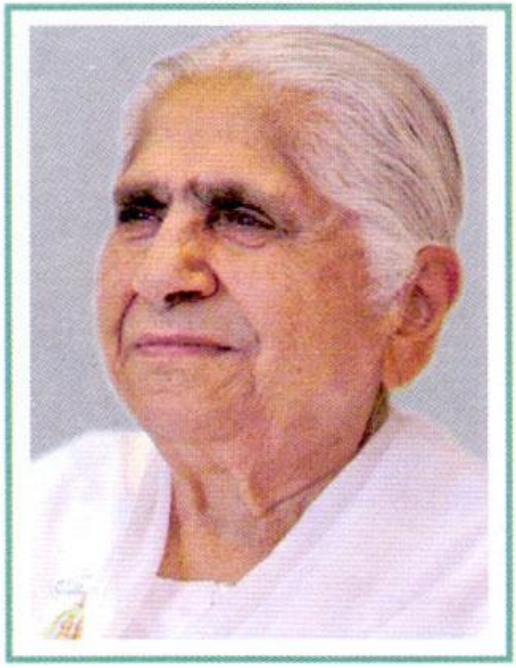

ईश्वरीय नियम-मर्यादाओं में सदा अचल

दूसरों में बल भरने वाले आप सदा सबल

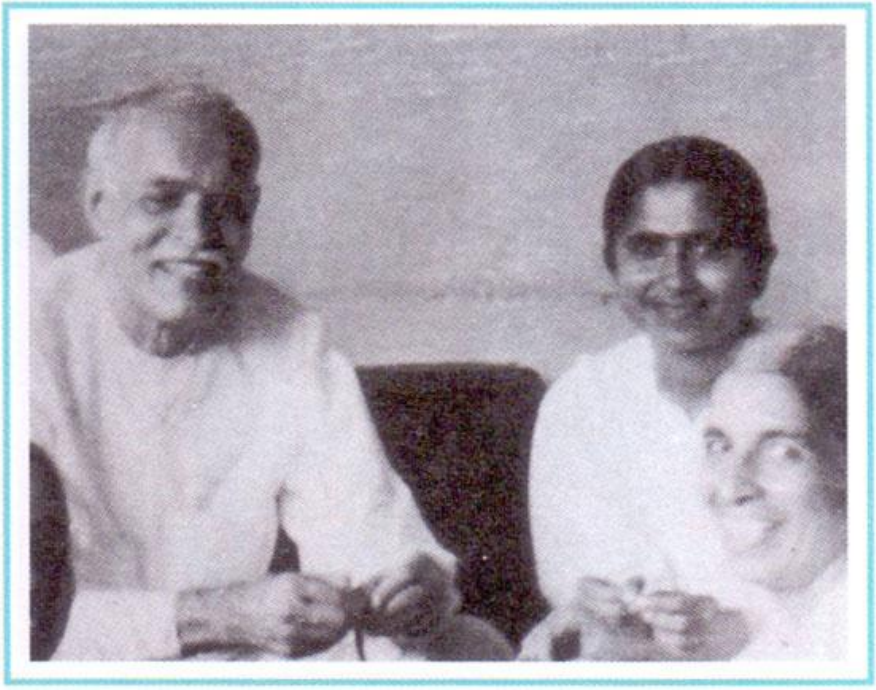

आपके दिल में बाबा, नैनों में बाबा
सूरत से आपके झलकती अलौकिक आभा

ऐसे वातावरण का आप करते निर्माण
सर्व को जहाँ प्राप्त हो स्नेह और सम्मान

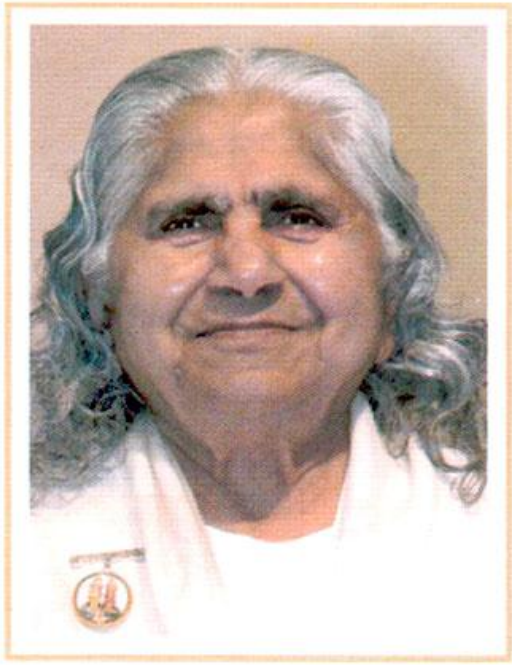

देख आपके मुखमण्डल की अलौकिक खुमारी
भूल जाते सब दुख, चिंता, कष्ट, बीमारी

विश्व सेवा में आपका अद्‌भुत उत्साह उमंग
चलने वाले को दे देता उड़ने के पंख

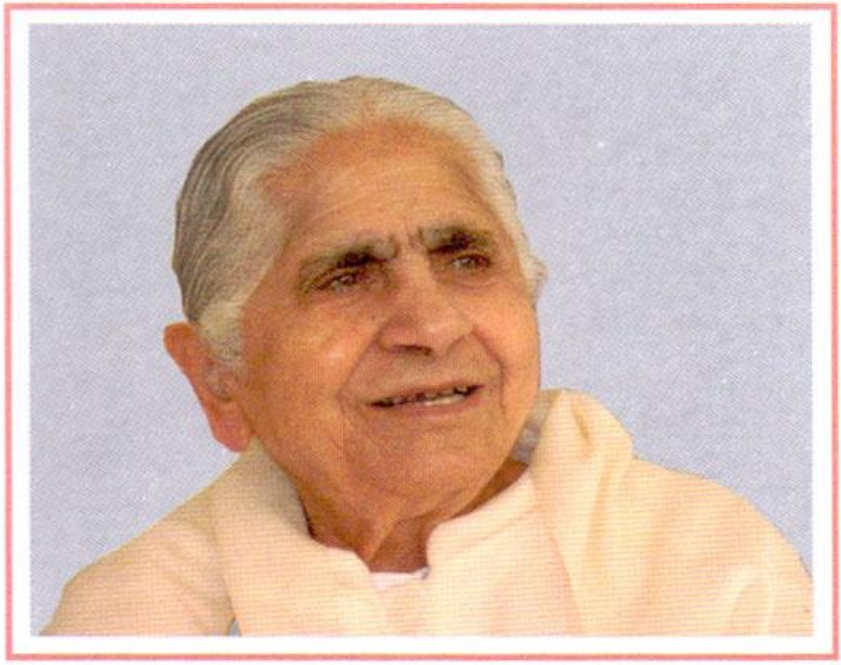

भगवान से आपका अति स्नेह का जुड़ाव
लवलीन चेहरा कर रहा शांति का फैलाव

स्मृति सागर से सुन्दर अनुभव मोती निकाल
आप कर रहे एक-एक आत्मा को निहाल

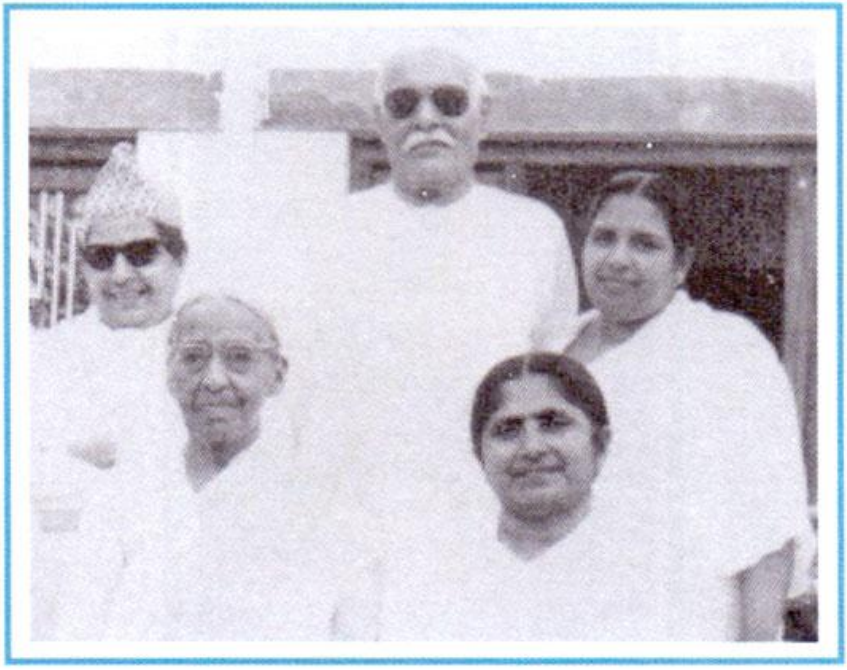

भगवान के रहते आप बहुत समीप
मानवता की सेवा आपको अत्यंत अजीज

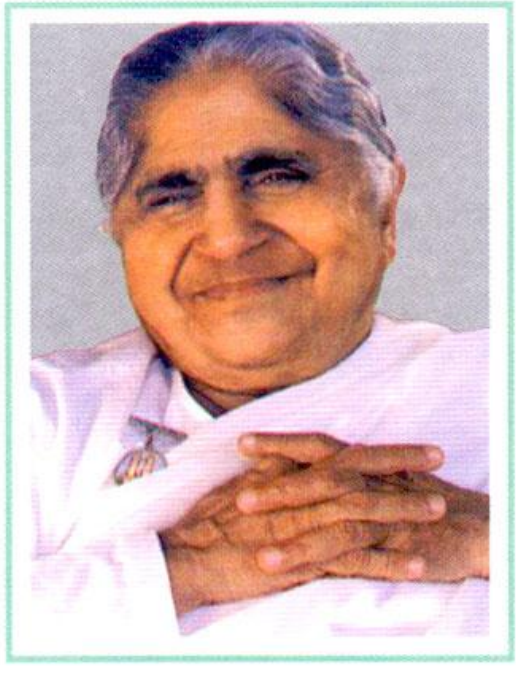

जनक समान जीवनमुक्त, विदेही और ट्रस्टी

यथा नाम, तथा कर्त्तव्य, तथा आपकी स्थिति

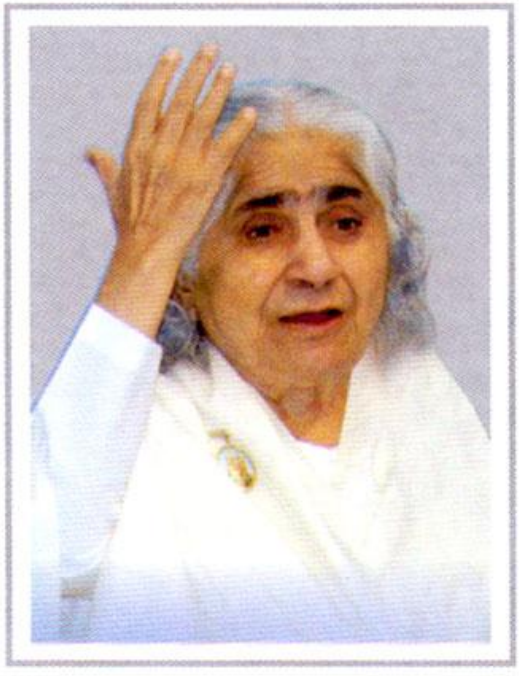

अनुभवों को बाँटने में दादी जी आप इतने उदार

कि गद्‌गद् होते मन, सुन आपके उद्‌गार

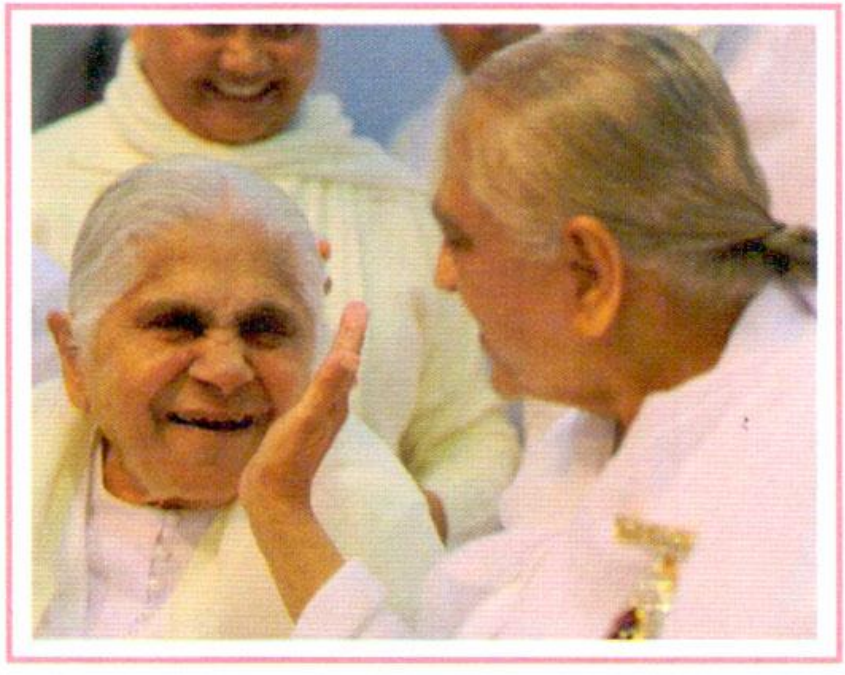

बाप, टीचर, सतगुरु से ऐसा आपका नाता
बाबा भी आपके बिना एक पल रह न पाता

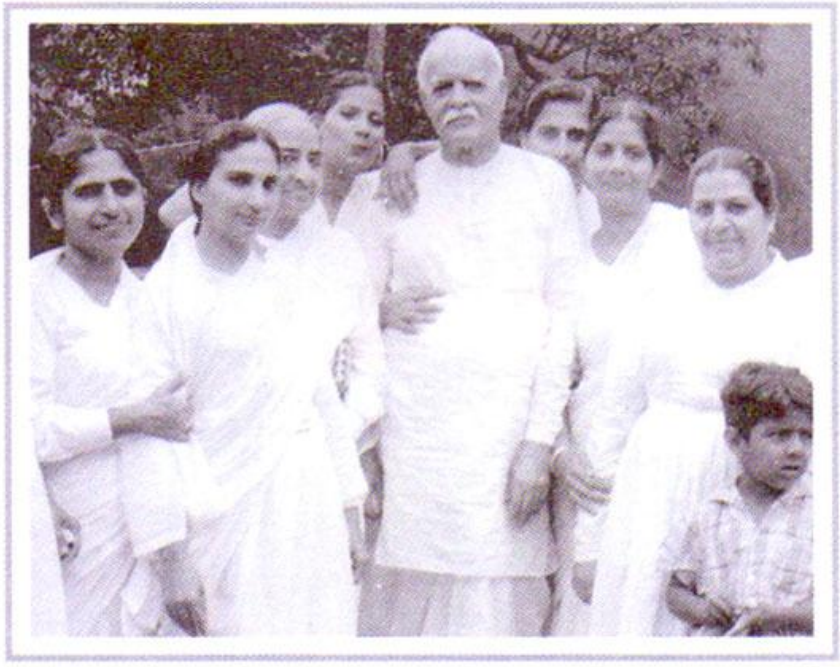

बाबा के प्यार में आपने इलाही सुख पाया

बाबा, मुरली, मधुबन मेरा, धड़कन ने गाया

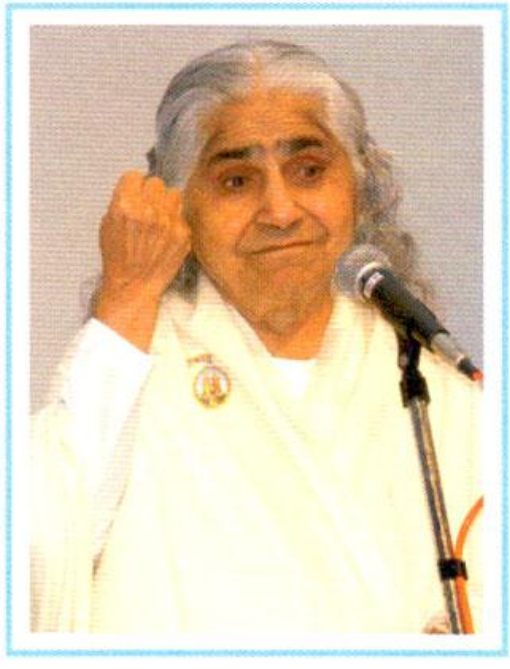

लवफुल रूप से लॉ पर चलना सिखाते
लॉफुल रूप से लव की महसूसता कराते

स्वयं से सदा सत्य रहने का दृढ़ विचार
आपकी सुखदायी शांत स्थिति का है आधार

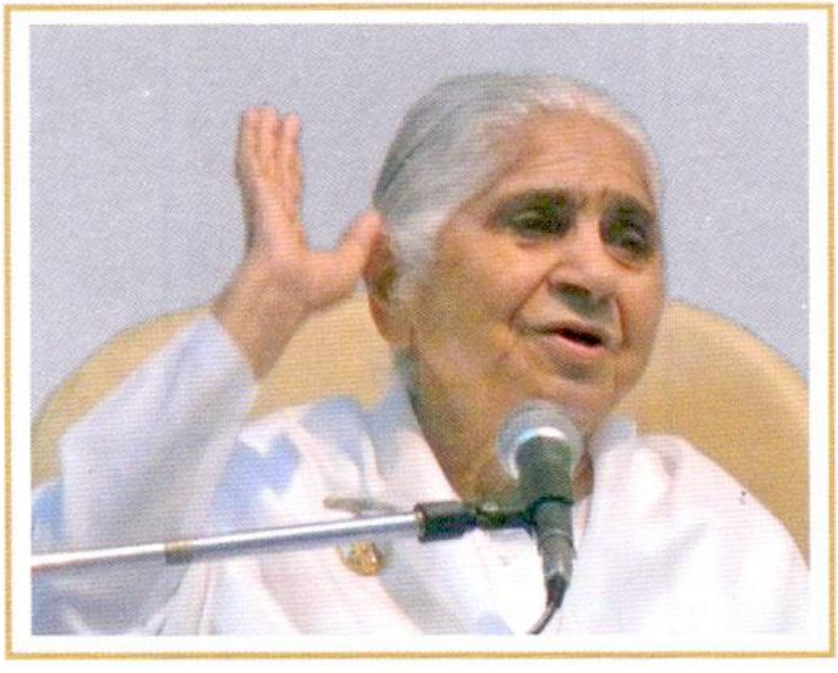

ज्ञान मंथन कर रोज मक्खन खिलाते
स्वयं उड़ते रहते, सर्व को भी उड़ाते

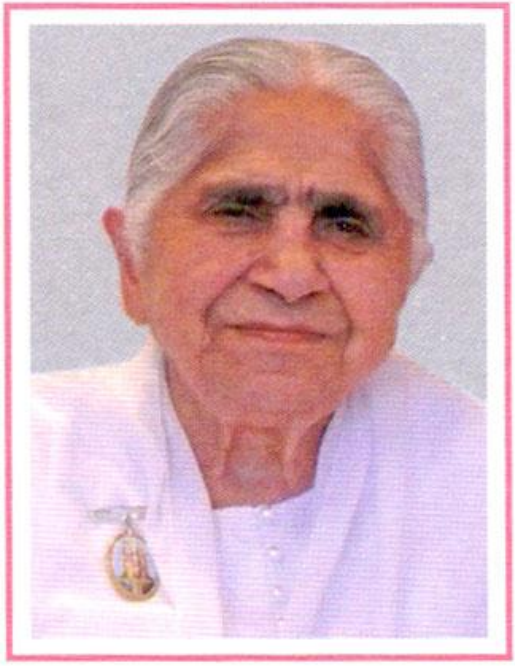

तप के बल से मन को ऐसा अचल अडोल बनाया

सबसे स्थिर मन का अनूठा खिताब पाया

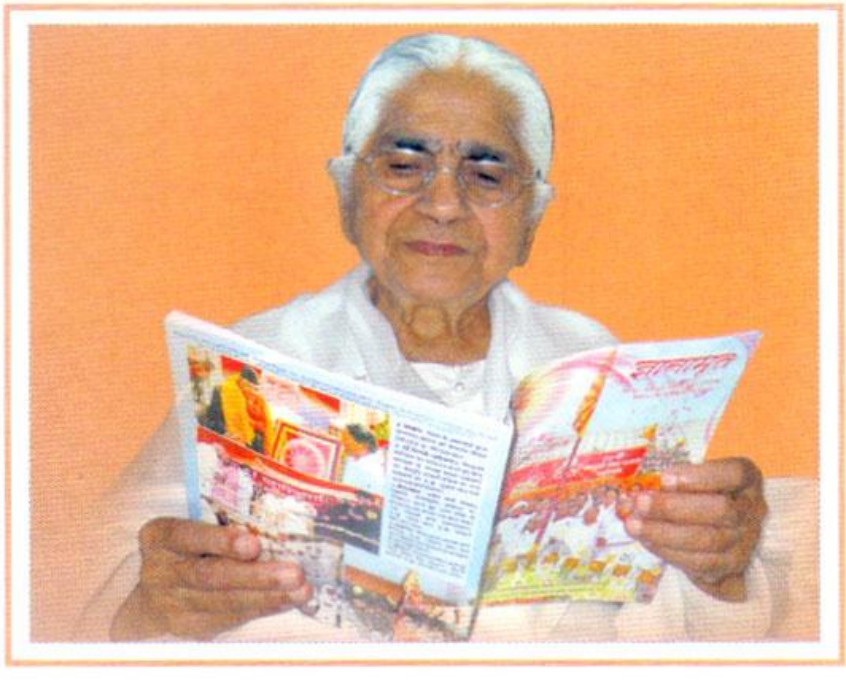

बुद्धि में ऐसा बैठा ज्ञान का रस
पराई बातों में नहीं आप परवश

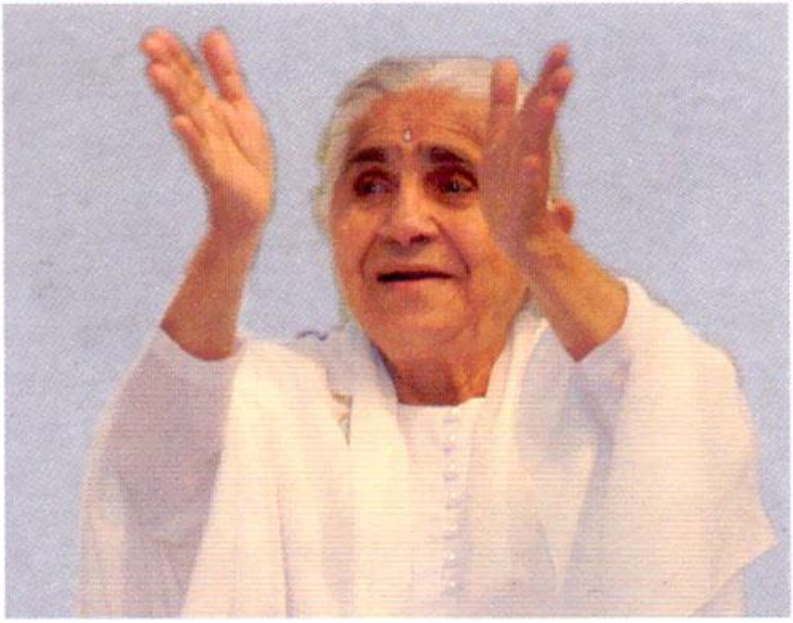

संपूर्णता की देवी दादी जी, स्नेह से संपन्न
आपकी पालना से बने धन्य-धन्य जीवन

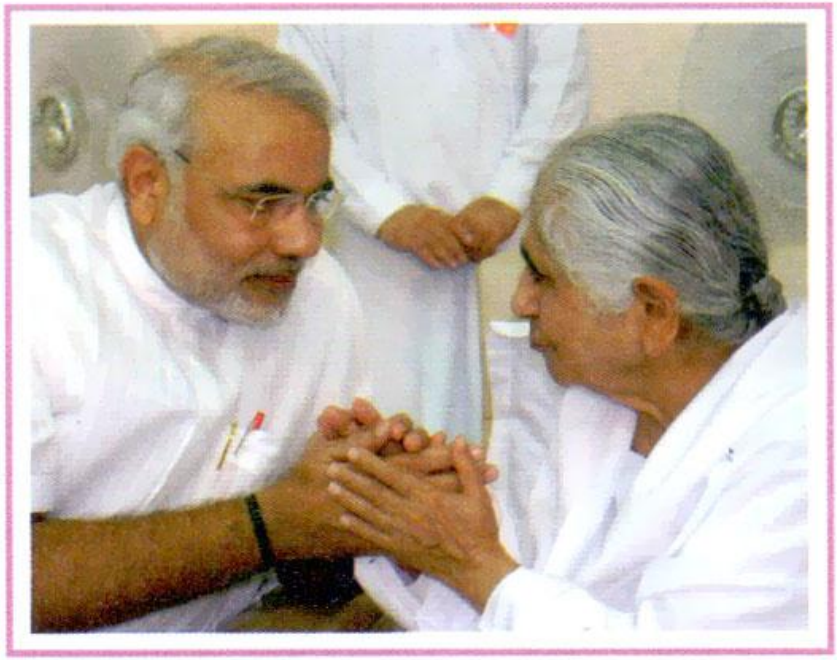

प्रभु पसंद, परिवार पसंद दादी जी आप

आपके निःस्वार्थ स्नेह की सबके दिल पर छाप

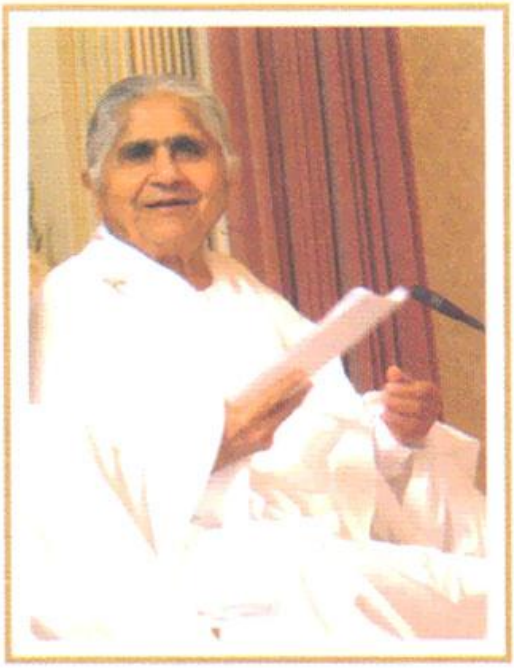

मुरली है आपकी जान

मुरली में बसते आपके प्राण

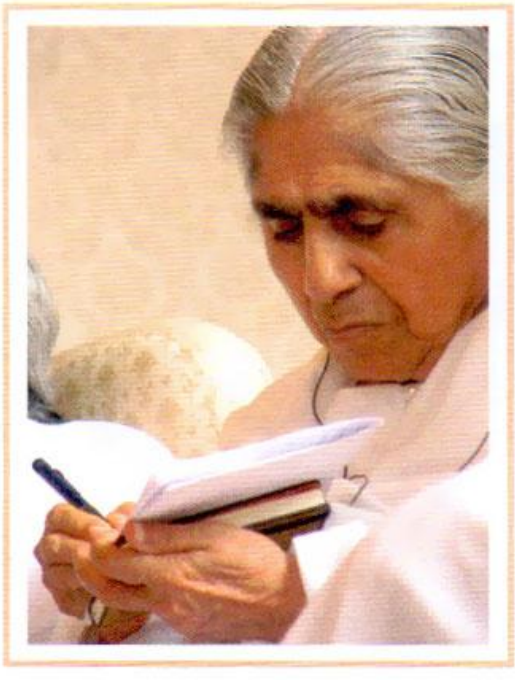

रूहानी पढ़ाई पर पूरा ध्यान
ज्ञान मोती चुगते आप हंस समान

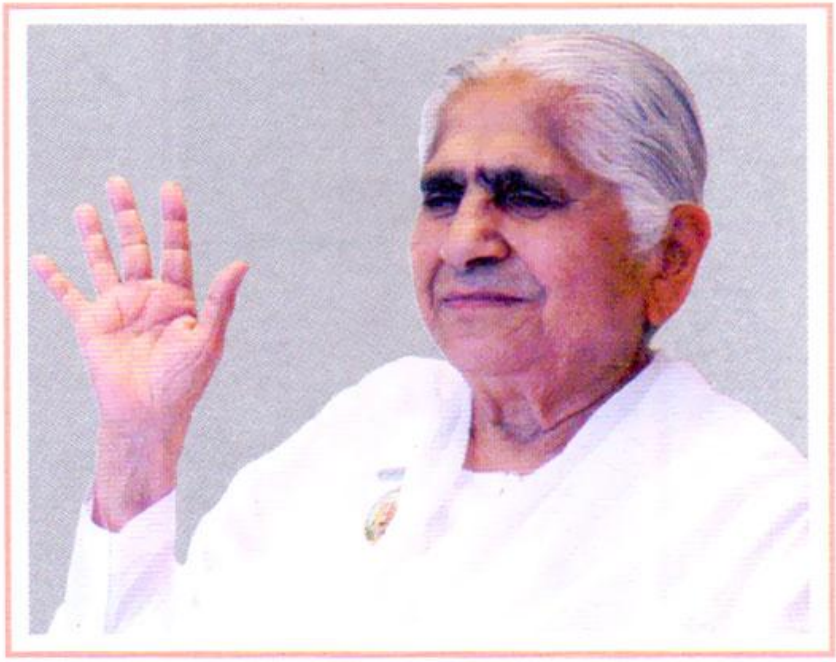

अमृतवेले का अमृत आप पीते-पिलाते

अमर भव के वरदानी आप सबको अमर बनाते

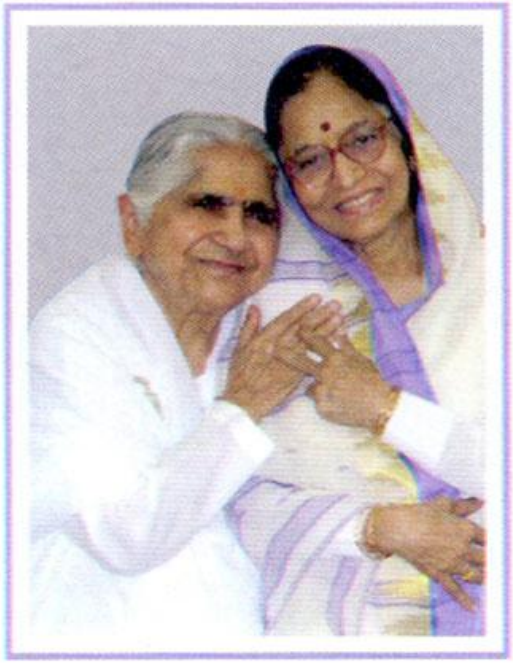

प्रेम की अविरल धारा आपसे बहती हर ओर
इस मृदुल सरिता में प्राणी होते सराबोर

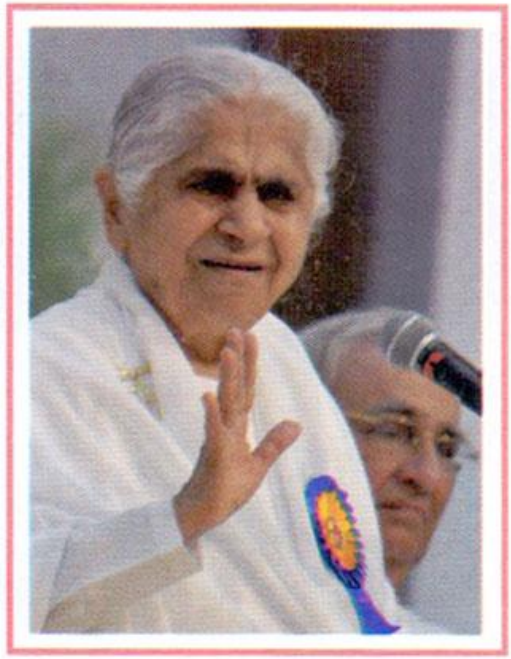

स्पष्टता और ईमानदारी की जीवंत पहचान

समस्याओं का देते सदा सरल समाधान

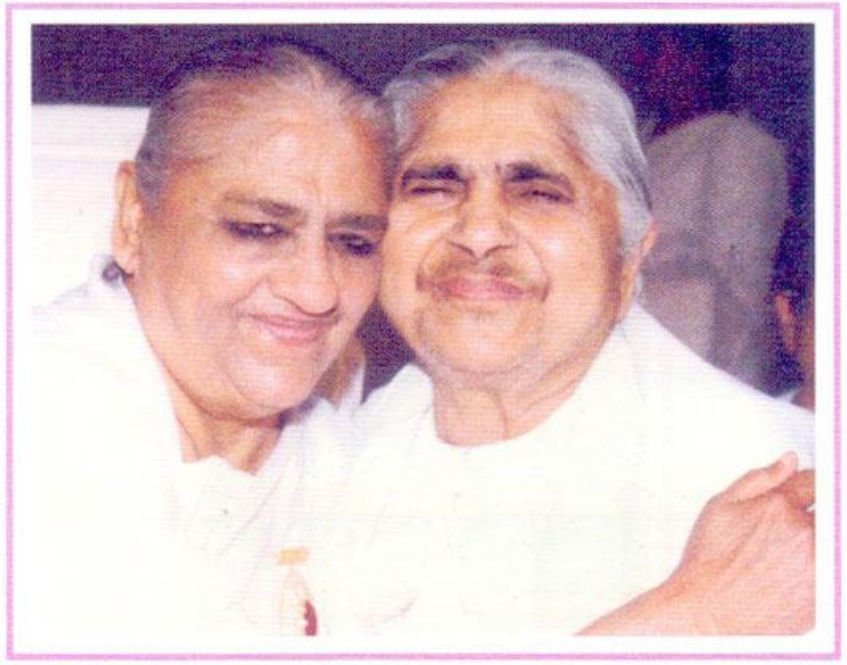

भगवान का साथ आपको बहुत भाता

उसके सिवा कुछ नज़र नहीं आता

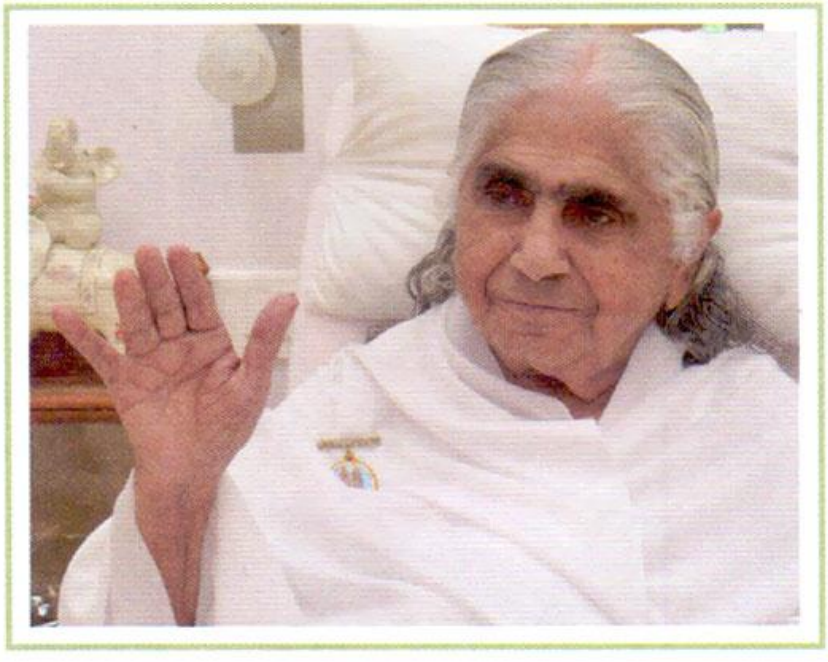

परमसत्ता से भरकर पवित्र प्रकाश
विश्व ग्लोब को देते आप निरंतर सकाश

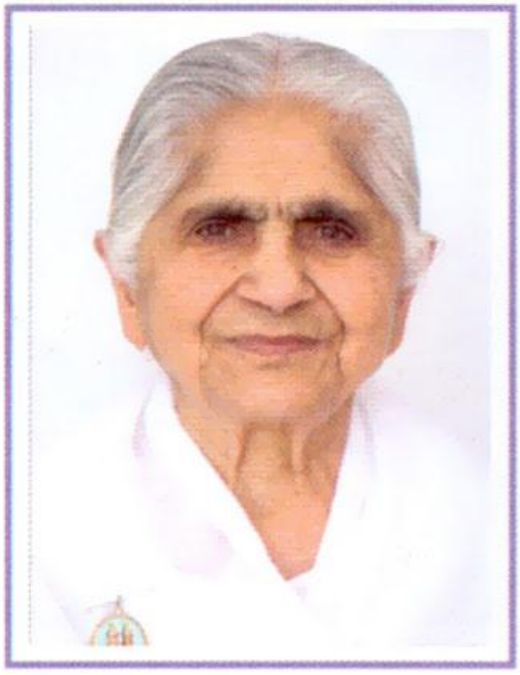

शरीर की प्रकृति को क्या खूब चला रहे आप
श्वासों श्वास सर्वस्व सेवा में लगा रहे आप

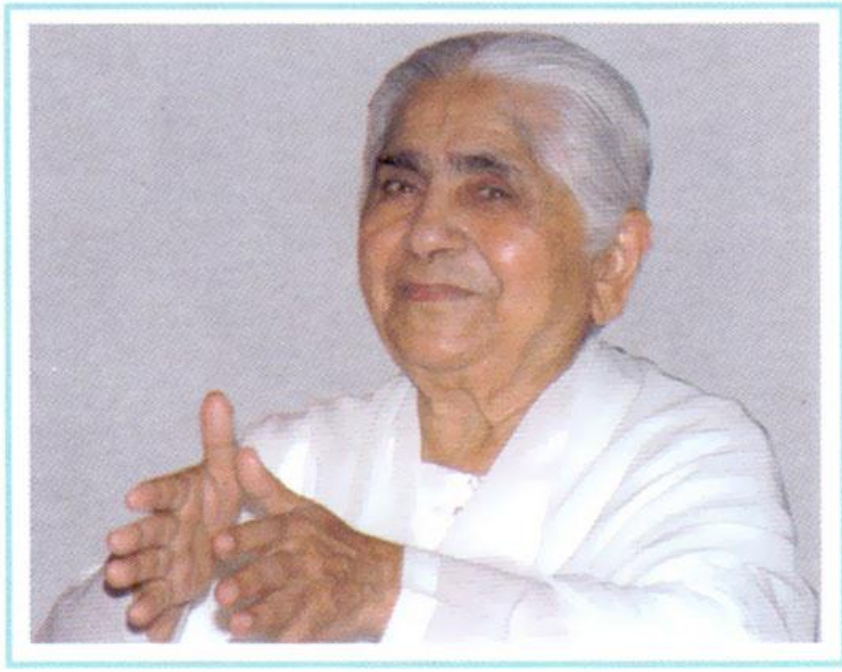

आपके परिवर्तन की गति बेमिसाल

कायम करती हमारे लिए अनूठा मिसाल

आध्यात्मिक उन्नति में आप सदा तत्पर
स्व पर ध्यान नहीं होता कभी कमतर

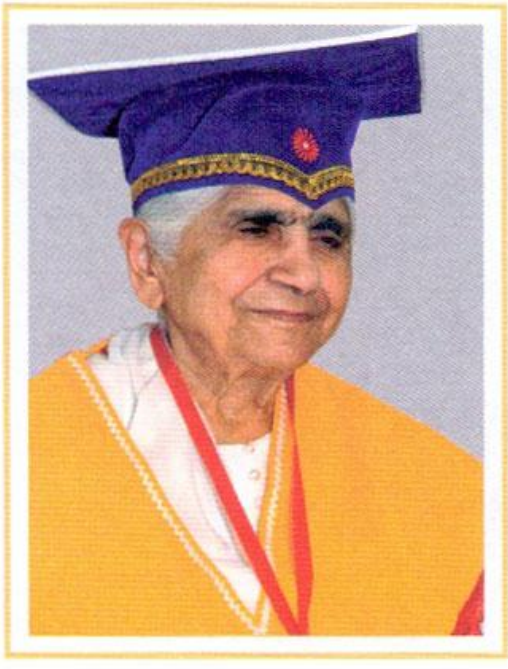

रूहानी सेनानी आप रहते सदा सजग
माया आपकी सीमा में रख ना पाई पग

प्रभु से समीप संबंध की लगन
'मेरा बाबा, मीठा बाबा' अनुभव है गहन

उन 'ओल्ड एंड गोल्ड' दिनों की बातें जब आप सुनाते

अतीन्द्रिय आनन्द के झूले में सबको खूब झुलाते

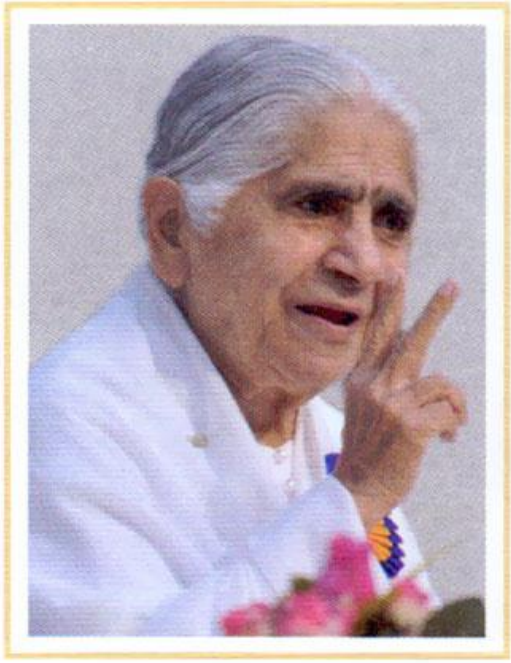

नये-पुराने सर्व के प्रति भावना यही आपकी

जो बाबा से मैंने पाया, मिले सबको भी

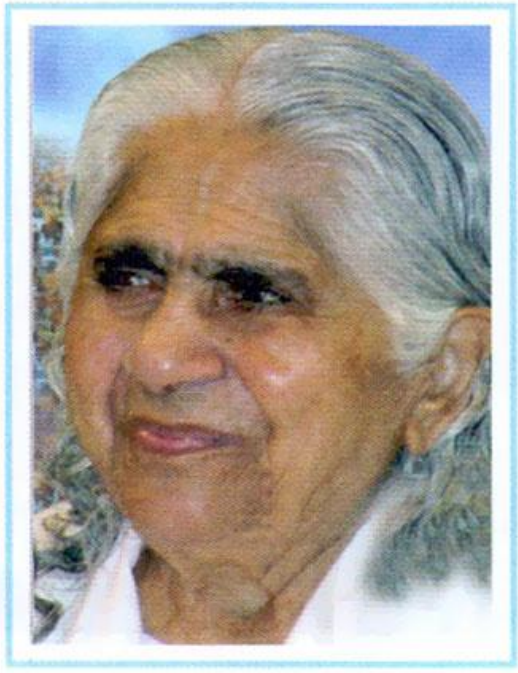

मनन से मगन अवस्था ऐसी बनाई
आपकी उपस्थिति से मस्ती रूहानी छाई

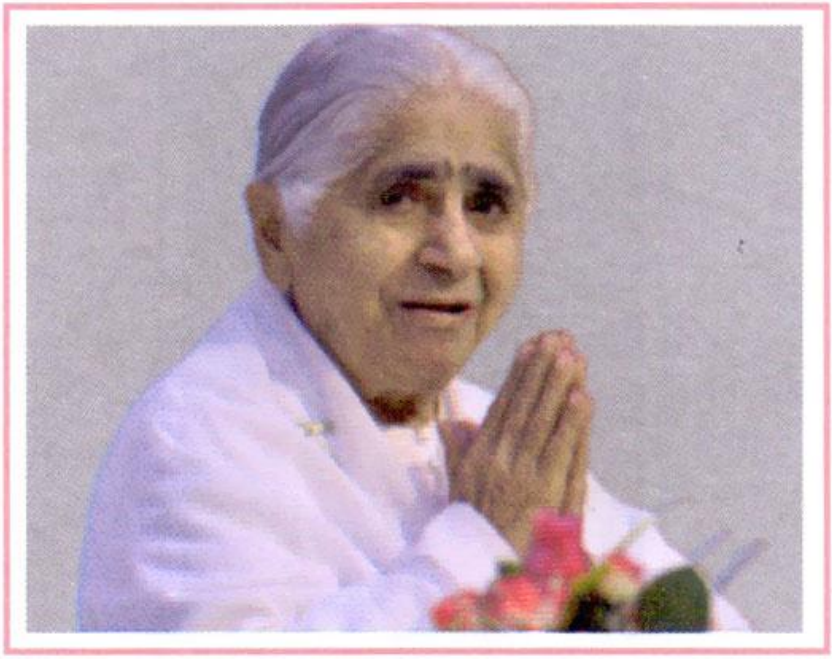

फालो फादर कर हर कदम उठाते
'पहले आप' कह सबको आगे बढ़ाते

सदा सबकी आप प्यारी, बाबा के दिल की दुलारी

महकाती मधुबन क्यारी, बापदादा जाते बलिहारी

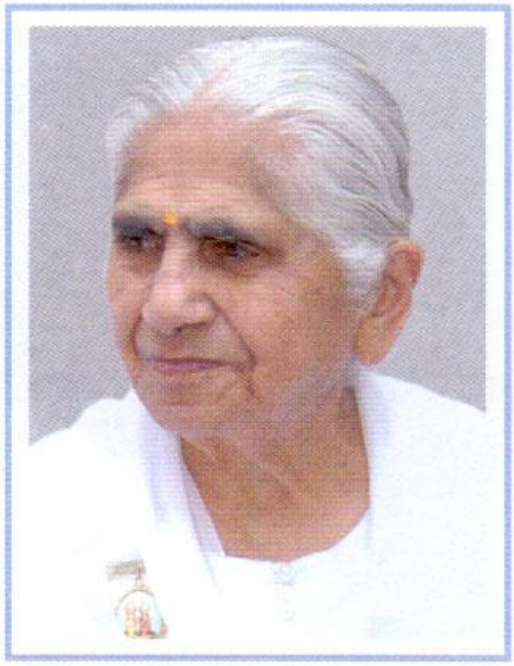

हर परिस्थिति को किया धैर्य से पार
कभी नहीं छोड़ा सद्भावना और प्यार

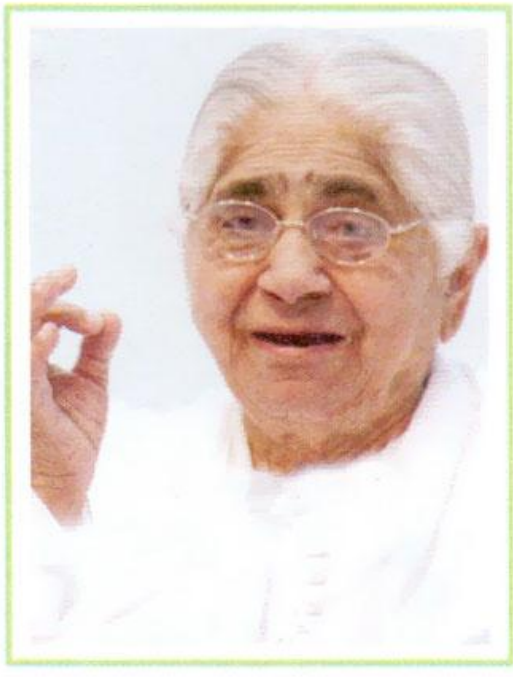

वर्तमान का पल-पल रख ध्यान,
एक-एक सेकंड आप बना रहे महान

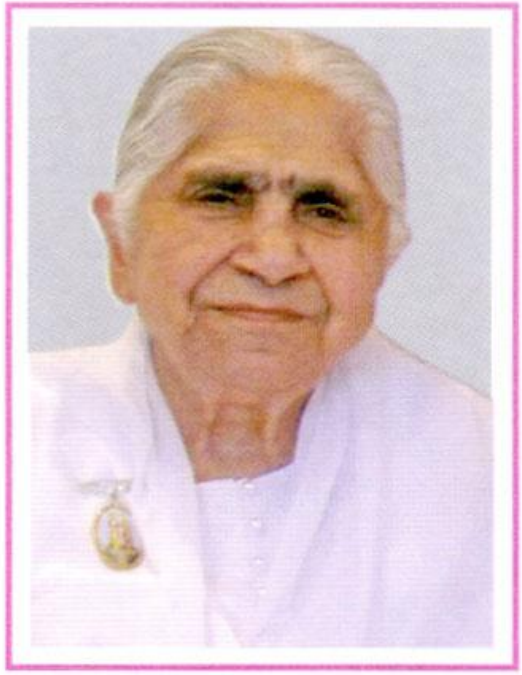

आपकी आंतरिक स्थिति में है आनन्द और हर्ष

आपके श्रेष्ठ वायब्रेशन करते अंतर्मन को स्पर्श

दया और दुआ की हे देवी
आप मात-पिता, बंधु, सखा-सी

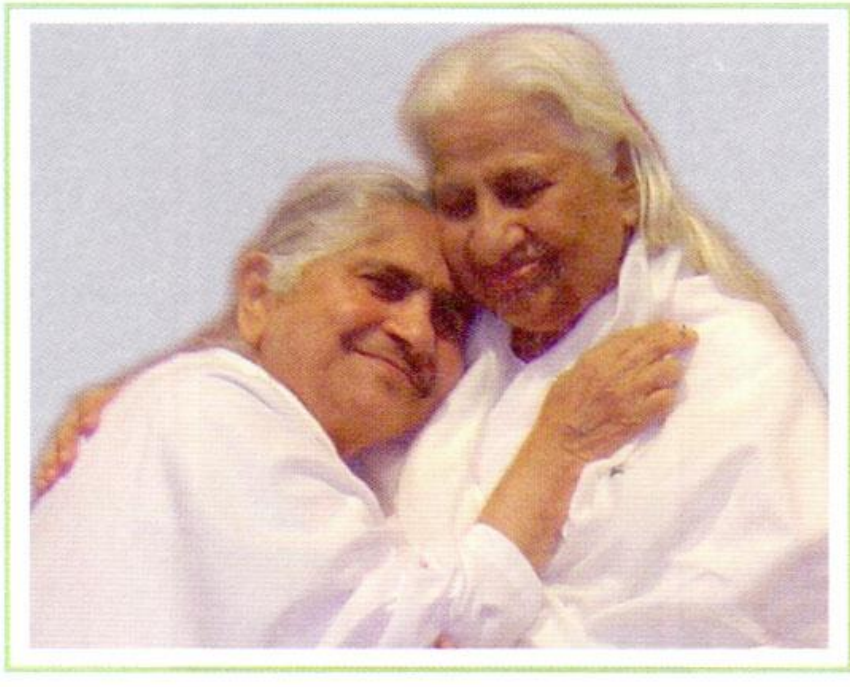

आदि रत्न दादी जी, आप यज्ञ के आधार
आपका सबसे, सबका आपसे है बहुत प्यार

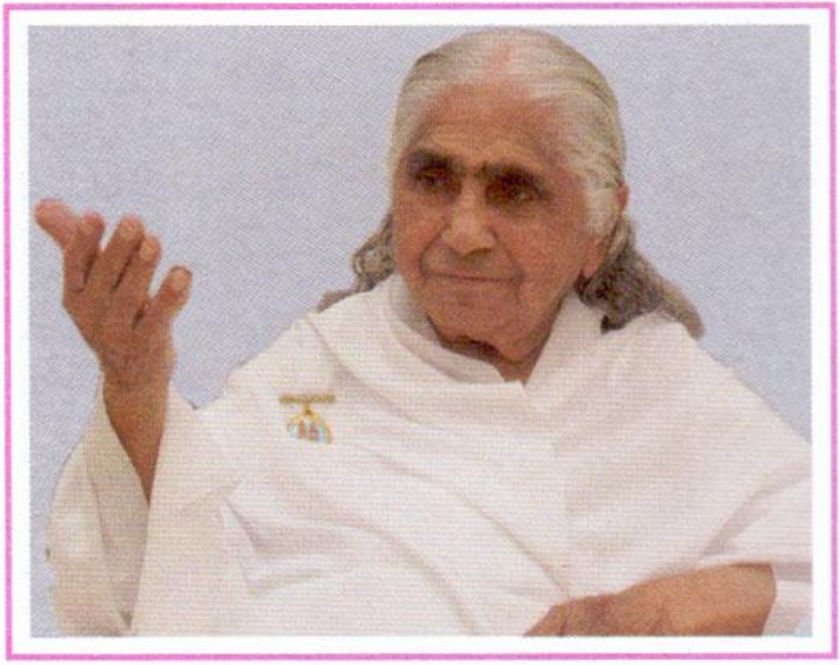

सभी में रखते इतनी आशा और विश्वास
कि भूलों को भुला सबको बुलाते अपने पास

हर आत्मा प्रति आपका सत्य प्यार है

सच्चे हितैषी सा मधुर और सरल व्यवहार है

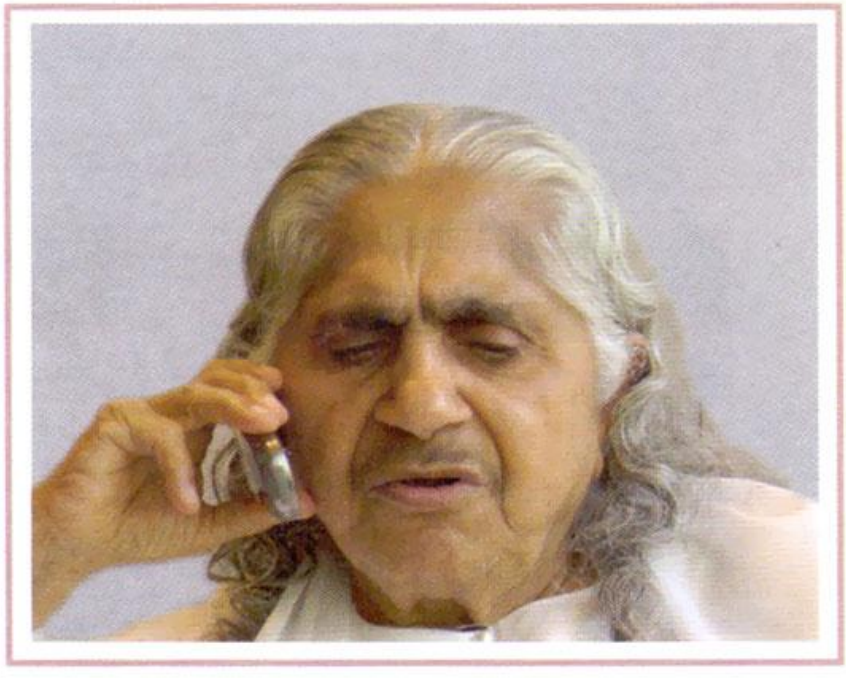

सर्व के गुण, विशेषताओं पर रहती आपकी नजर

हंस समान चुगते गुण मोती, किनारे करते कंकर

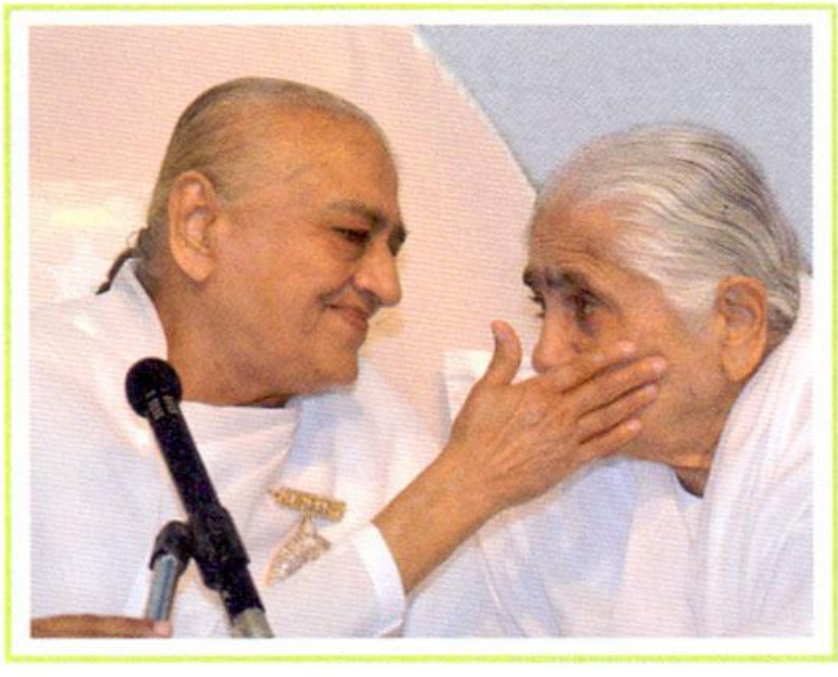

तन-मन-धन से शिव पर ऐसे हुए कुर्बान
कि भगवान खुद रखता आपका ध्यान

महादानी वरदानी आप मस्त फकीर
बना रहे कितनों की भाग्य लकीर

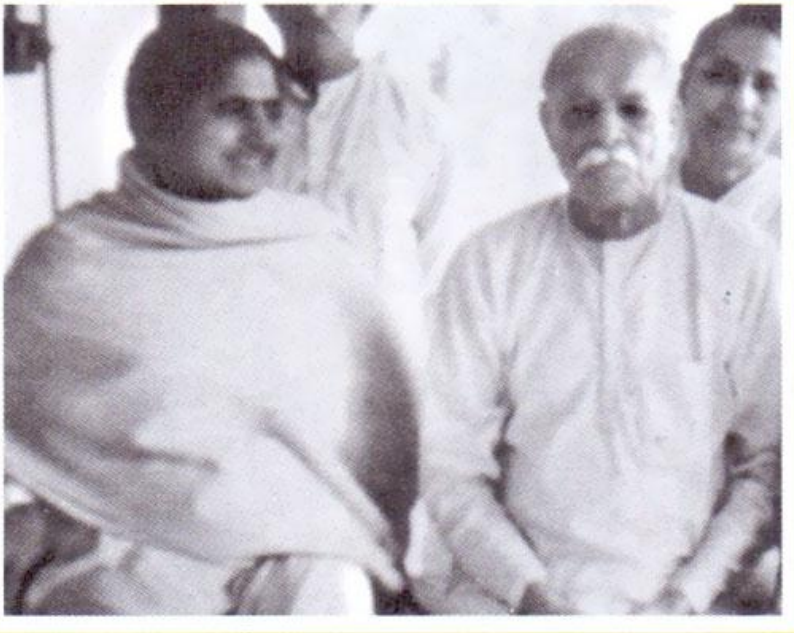

चलते-चलते यूँ बाबा आपको मिले
दिल के भाव गीतों में फूल बनकर खिले

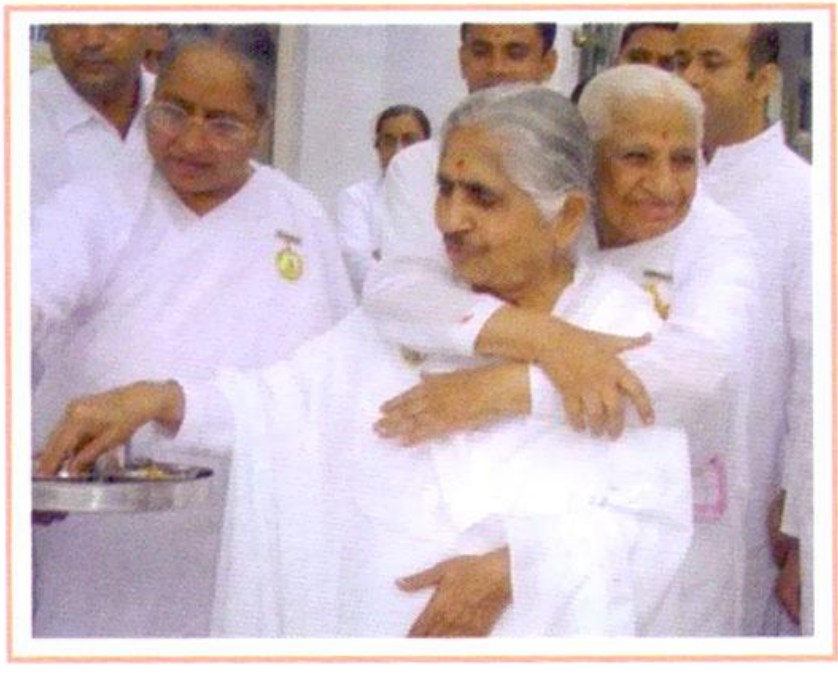

सेवा बिन आपको आता नहीं आराम

सेवा बना रही आपको आयुष्मान

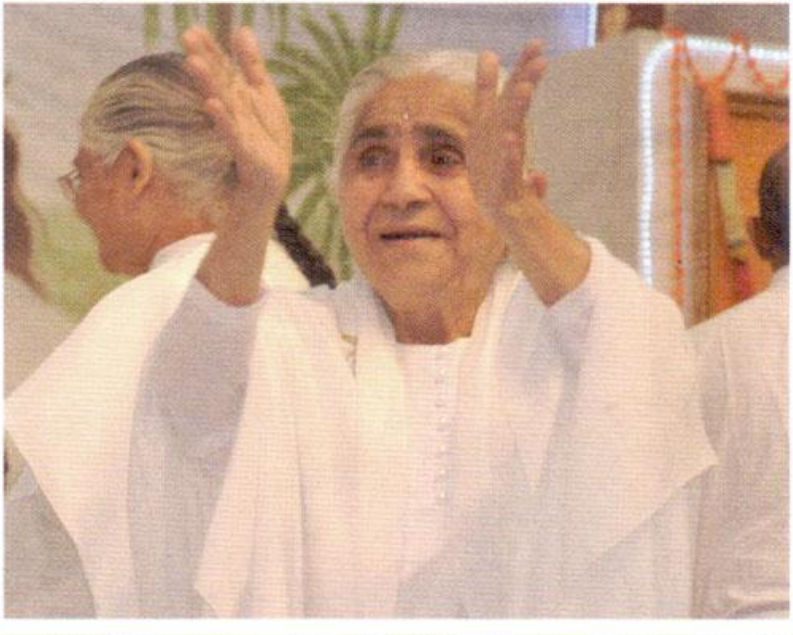

सुन्दर पुष्प सा खिला आपका जीवन
स्नेह और शक्ति का गजब संतुलन

आपकी दृष्टि औरों को करती ऐसा बल प्रदान

जैसे एक माँ अपने बच्चों को बनाये बलवान

नन्ही आयु से ही थी, मन की ऊँची बहुत उड़ान
जीवन श्रेष्ठ बनाने की दिल में लगन महान

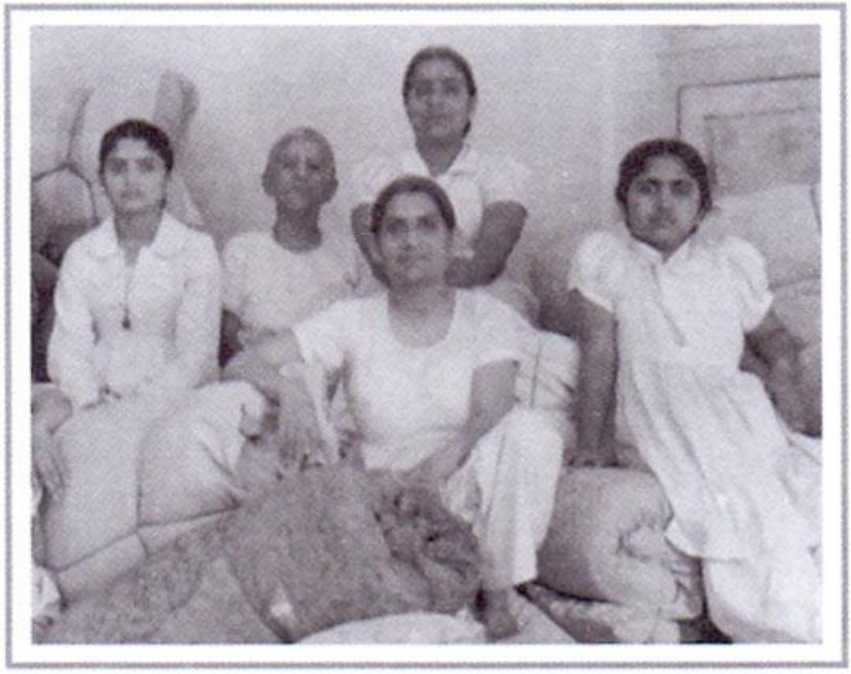

परिस्थिति से ना किये समझौते ना खाई हार

सदा त्याग, तप और सेवा का पथ किया स्वीकार

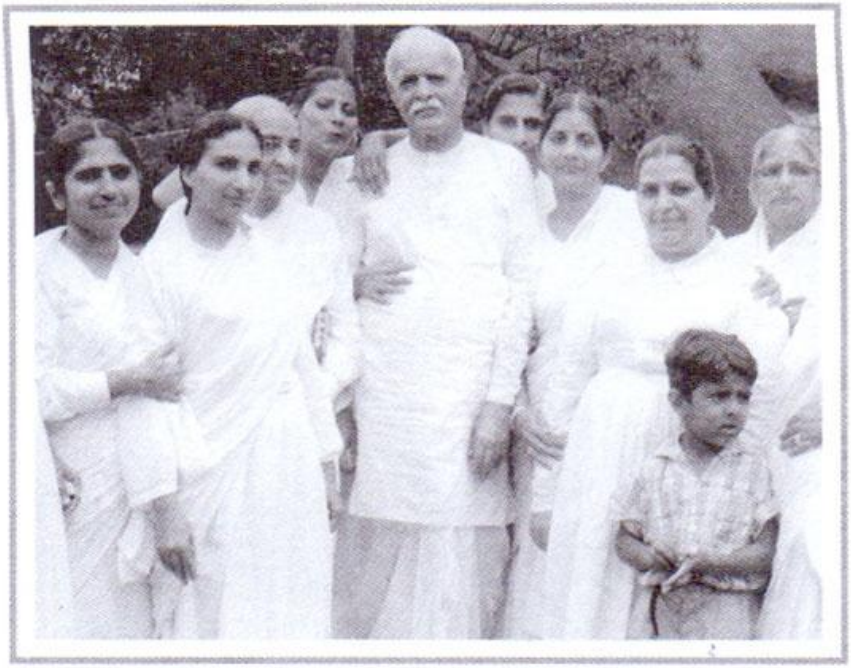

साकार बाबा से आपने ऐसी सीख पाई
एकनामी और एकॉनामी रोम-रोम में समाई

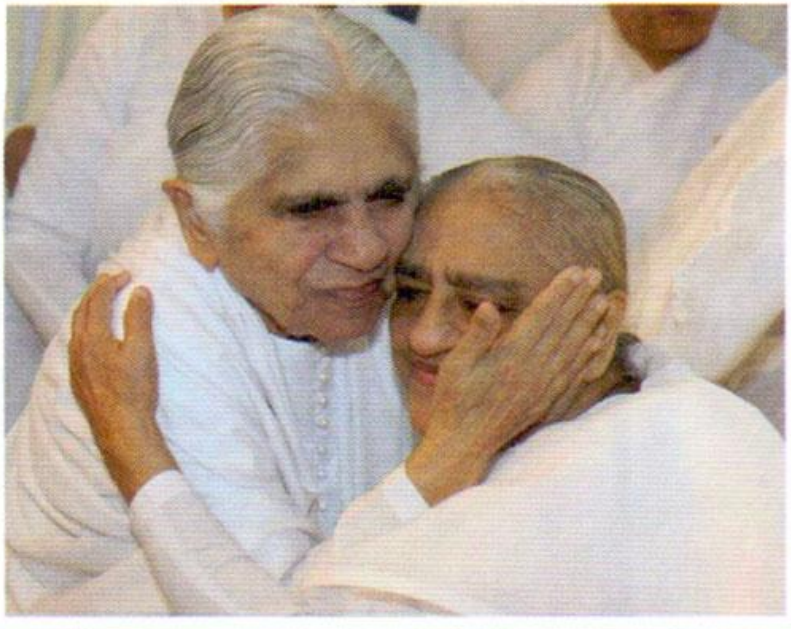

झूमता रहता हृदय आपका, सुन मुरली की तान
बालक जैसा भोलापन, और लिए दिव्य मुसकान

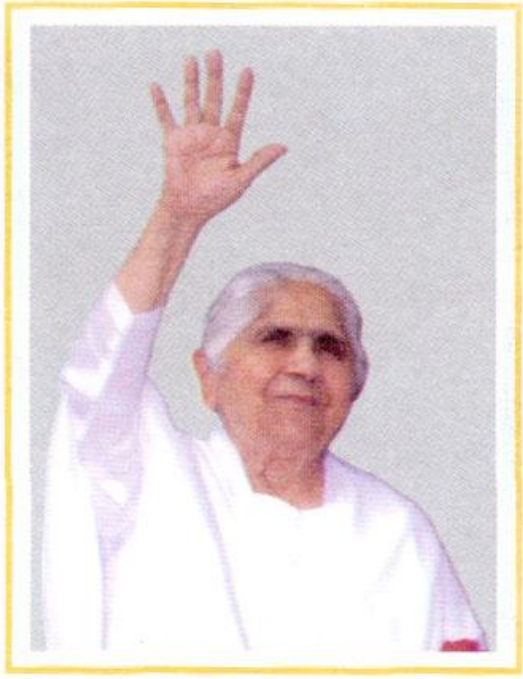

साथी और साक्षी भाव रख रहते सदा निर्लिप्त

क्यों-क्या की सोच से परे आप सदा प्रसन्नचित्त

प्रेम, पवित्रता, शांति और ज्ञान
आपके विचारों में पायें सदा स्थान

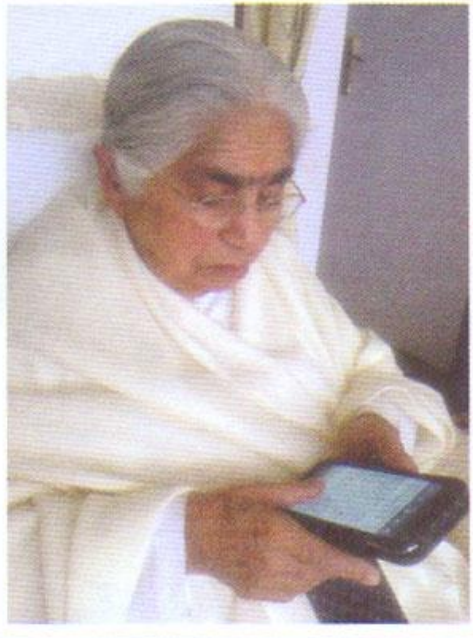

आप करते ऐसी समझ प्रदान
संदेह का हो जाता समूल निदान

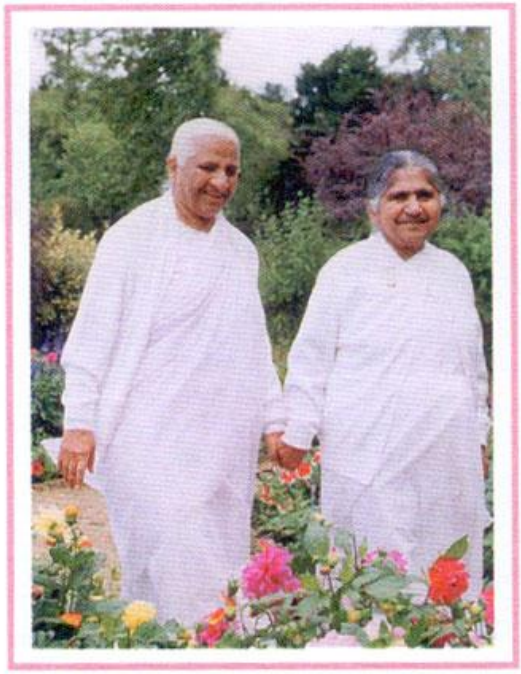

फास्ट और फर्स्ट पुरुषार्थ से बन गये समीप सितारे

यज्ञ में लिया विशेष स्थान, सबकी आप आँखों के तारे

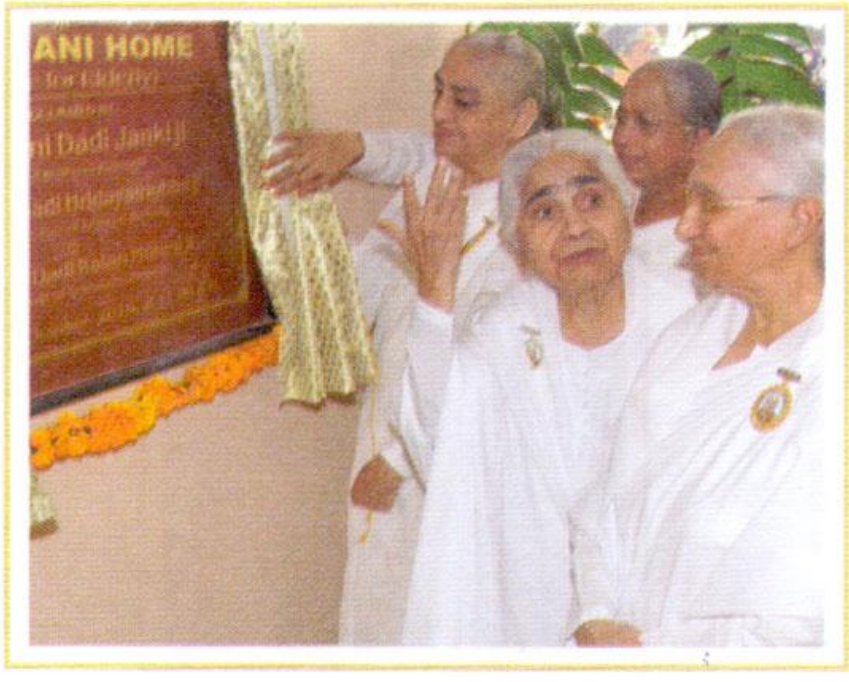

सभी में आप विश्वास जगायें,
सभी का आप विश्वास पायें
सर्व को हृदय से देती आप,
शुभभावना और दुआयें

मधुर मुस्कान रहती सदा आपके मुख पे
हृदय में है हल्कापन और चैन सदा चित्त में

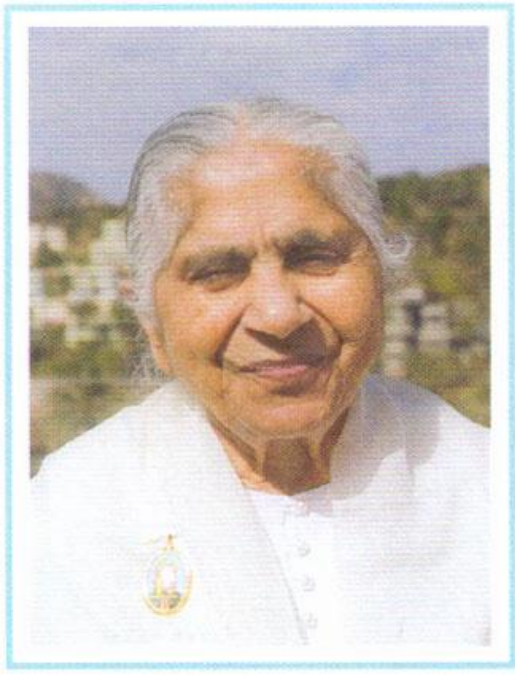

अपने अंतर्मन में आप झाँकें हर रोज
करें आत्म-उन्नति के अचल सरोवर की खोज

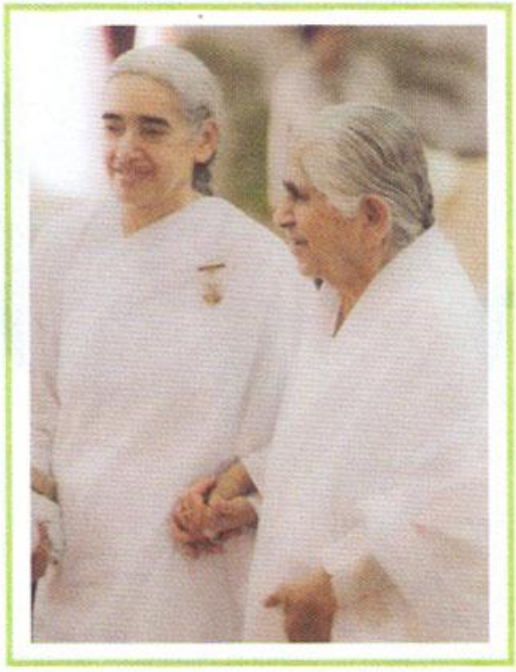

आपकी स्थूल और सूक्ष्म पालना दिलाती ब्रह्मा बाप की भासना

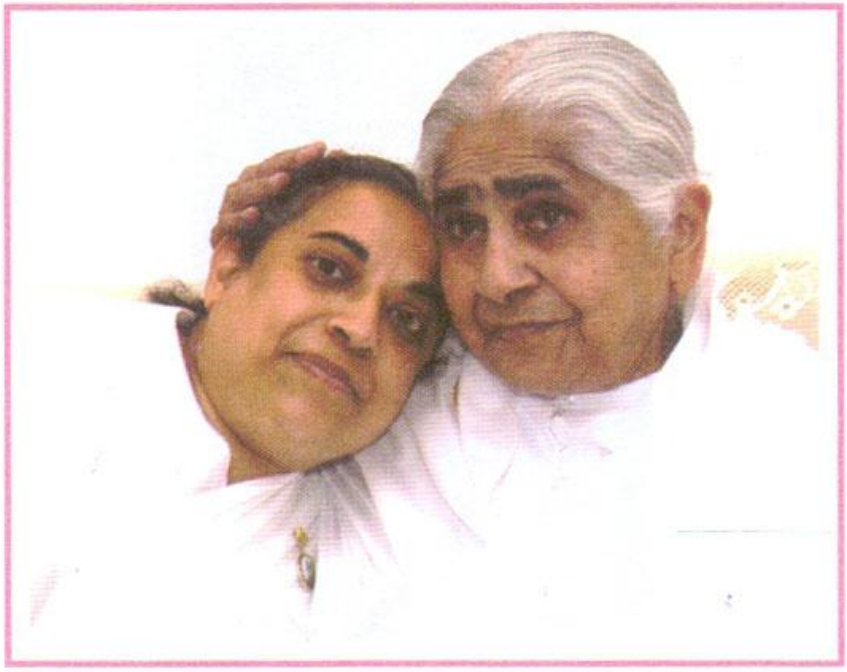

नयनों से झरता वात्सल्य,
मुख पर मधुर मुसकान है
ओ ममतामयी माँ दादी जी,
आप तो गुणों की खान हैं

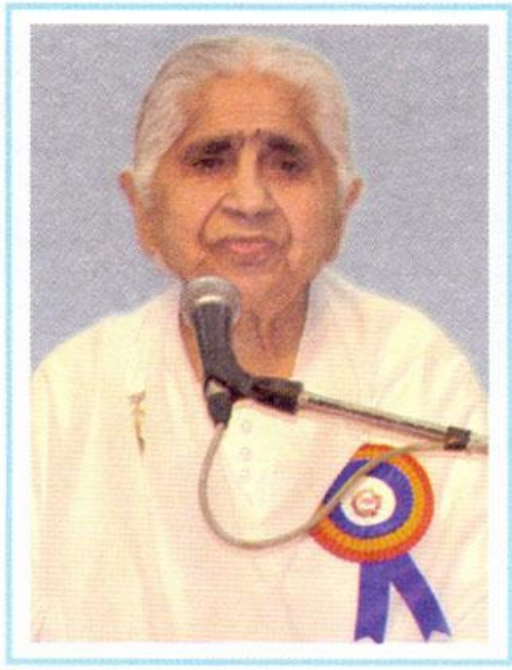

विशेषताओं को देखते, भूलों को बिसारते
रहमदिल की दृष्टि से आप सर्व को निहारते

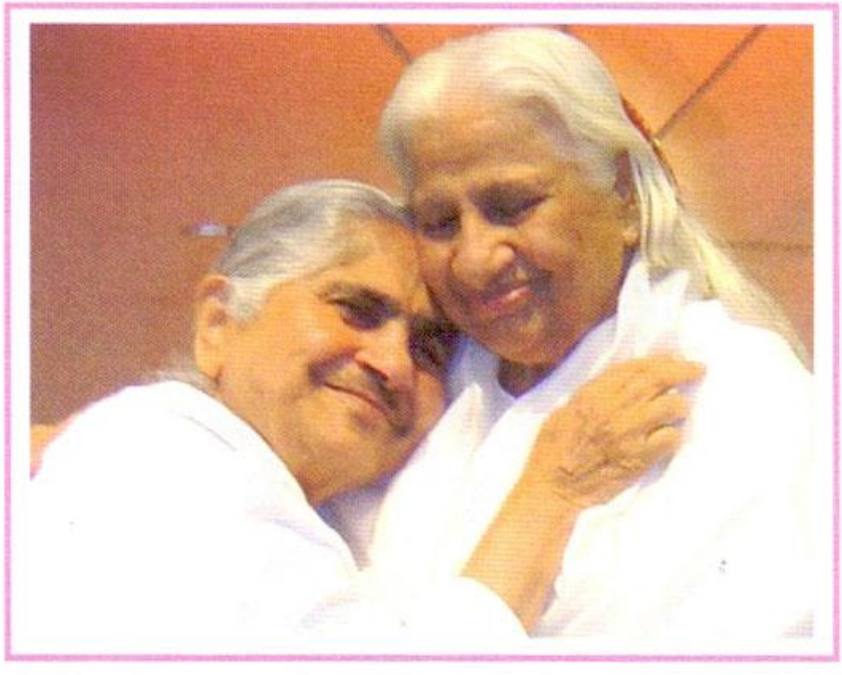

आप शांति की मूरत, शक्ति की अवतारी
ओ दादी माँ, आप सबसे न्यारी, सबकी प्यारी

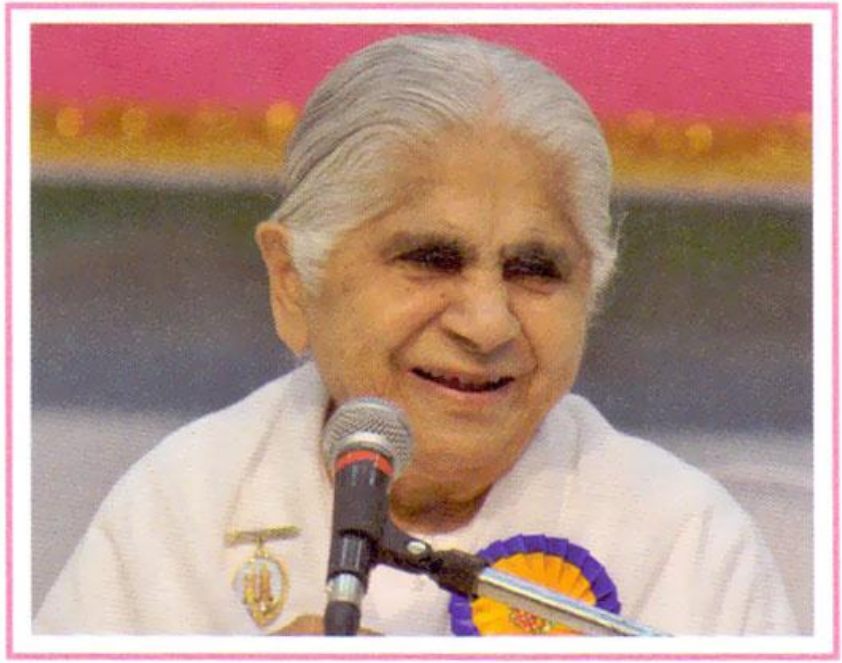

वाणी से छलकता माधुर्य और मिठास

चेहरे से झलकता बच्चे सा परिहास

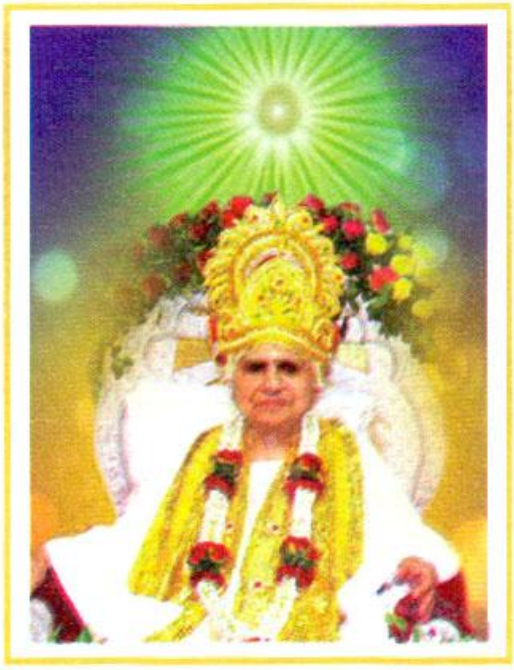

आपकी नेतृत्व कला है ऐसी शानदार
स्वयं और सर्व में निश्चय है जिसका आधार

रोम-रोम में समाया सेवा और समर्पण
दिलो-दिमाग में छाया बाबा और मधुबन

मीठी वाणी मीठा व्यवहार
मिठास आपके जीवन में
निश्छल निर्मल महकता चिन्तन
सदा मन उपवन में

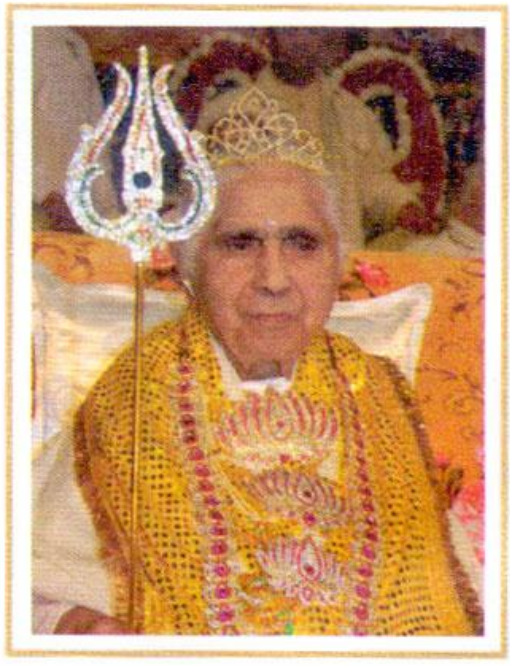

हर गुण और शक्ति में आप बेमिसाल
विश्व परिवर्तन की हैं थामे मशाल

हर श्वास और संकल्प में बसा बाबा नाम है
मुरली की तान पर झूमते सुबहो-शाम हैं
मधुबन आपकी जान है, आप मधुबन की शान हैं

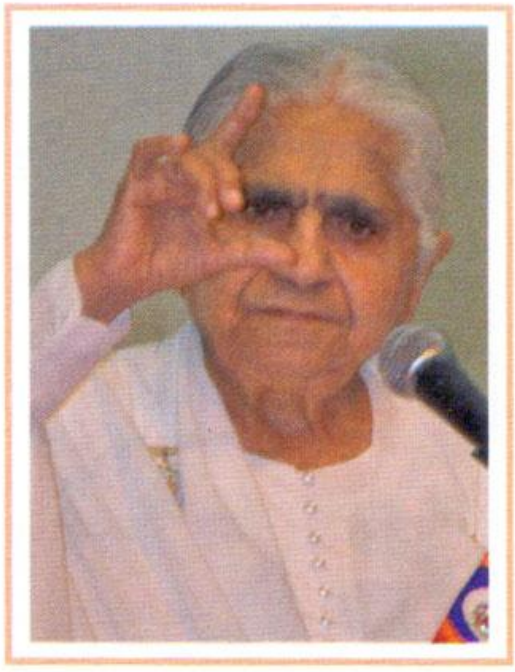

निमित्त भाव आपने सदा अपनाया
तभी खुदा आपसे सब करा पाया

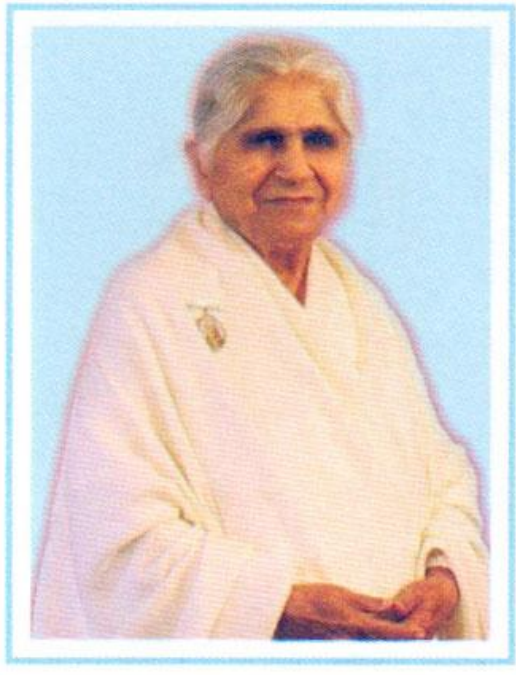

अंतर्मन में समाया इतना धैर्य और विश्वास

समस्यायें कर नहीं कर सकती आपकी शक्ति का ह्रास

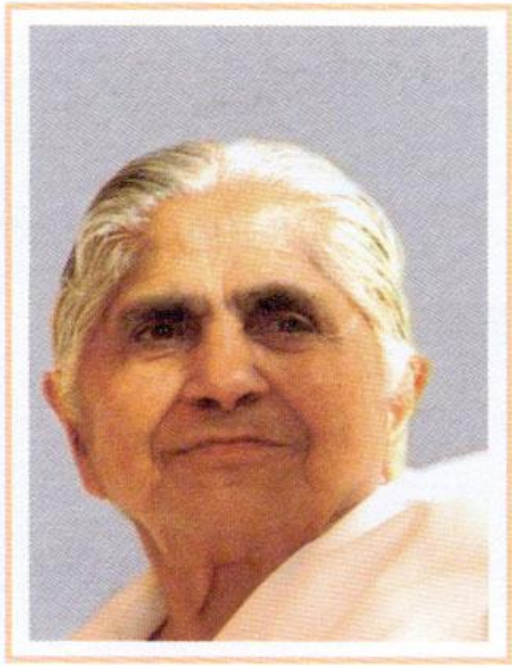

ड्रामा पर निश्चय सदा आपका अटल

नथिंग न्यू की स्मृति से रहते सदा अचल

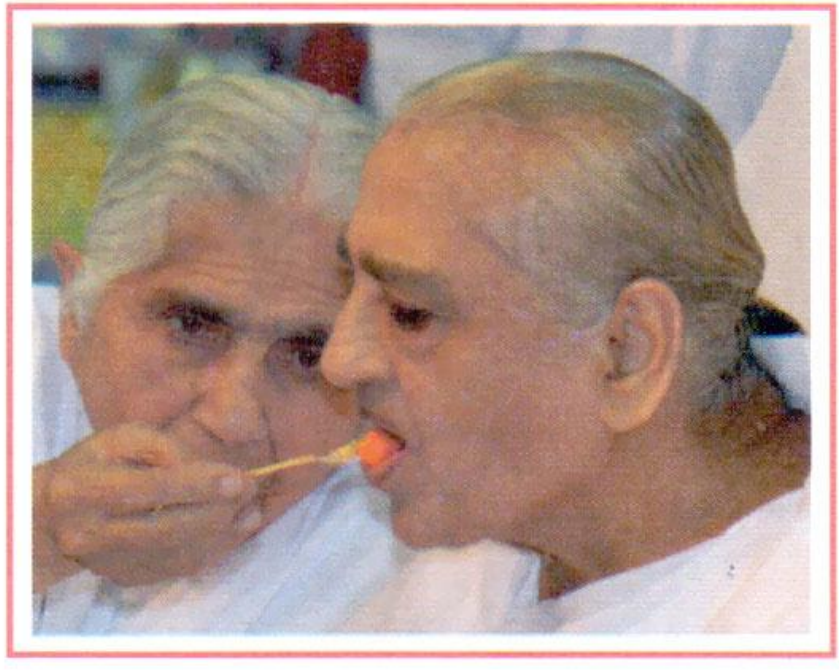

परमपिता से आपका इतना गहरा प्यार
हर आश को पूर्ण करने, रहते सदा तैयार

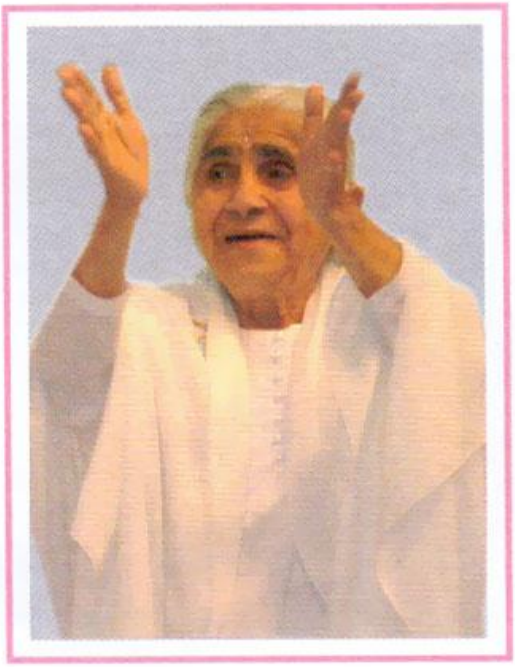

गुणदान करने में आपका नहीं कोई जवाब

सदा झलकता रहता ईश्वरीय नशा और रूहाब

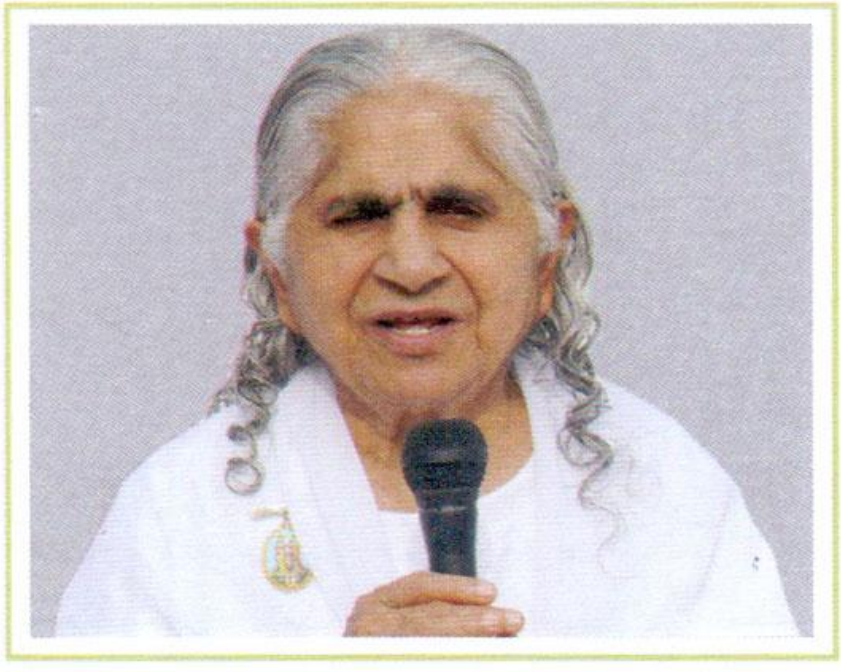

आपका मार्गदर्शन एक ऐसा उपहार
सेवा में सफलता का बनता आधार

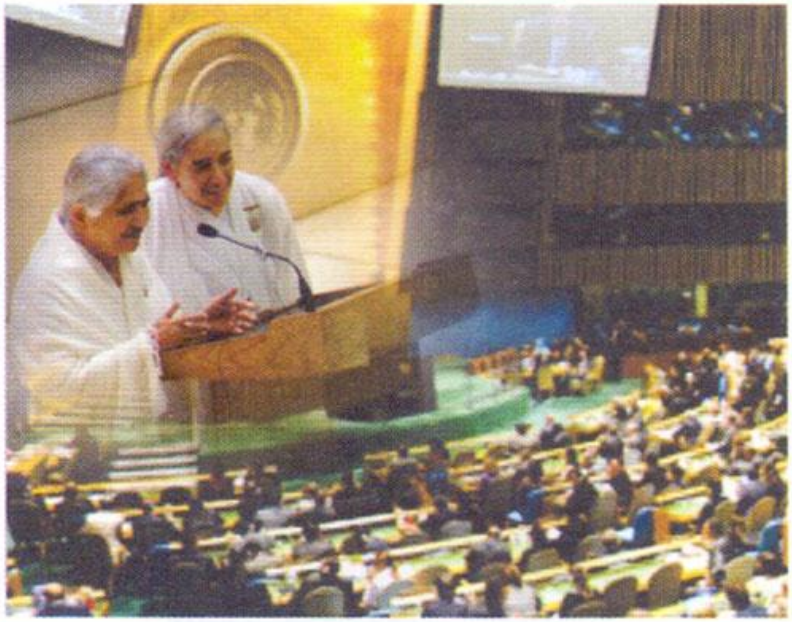

विश्व सेवा का ऐसा बीड़ा उठाया
देश-देश शिवध्वज लहराया

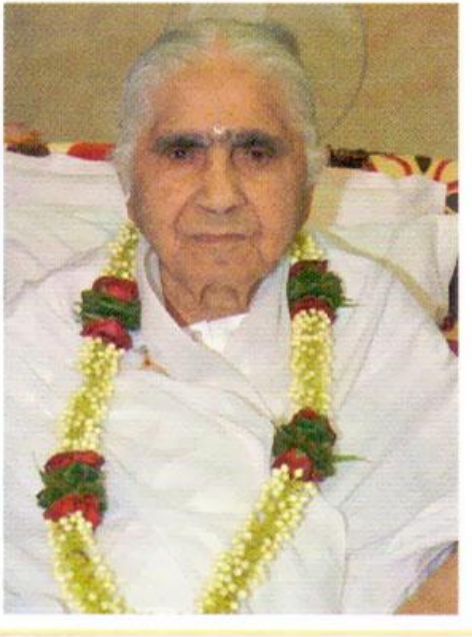

आपमें दिव्यता निरंतर गहराती है
दिव्य गुणों की सुगंध बढ़ती जाती है

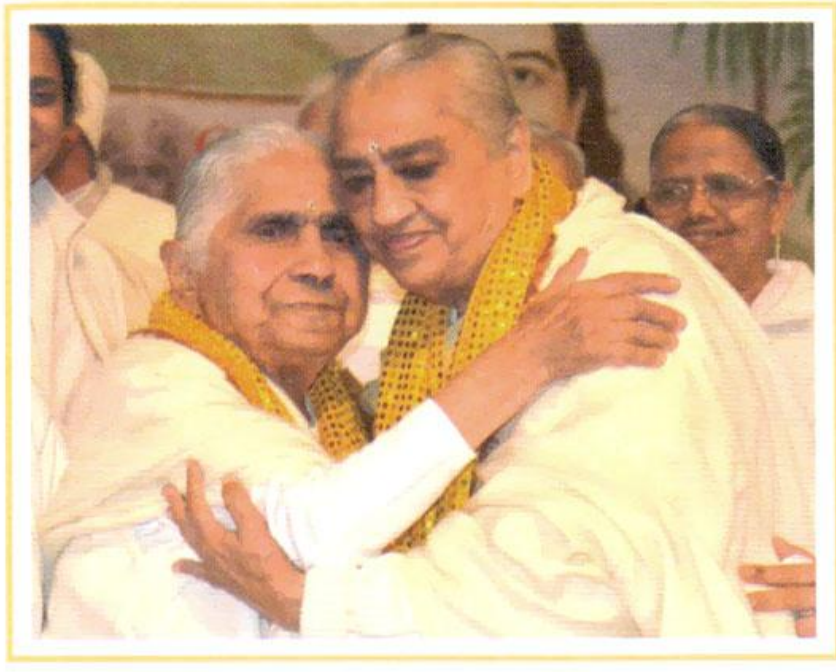

ज्ञान योग के चात्रक आप प्रभु के दीवाने
खुले दिल से बाँटते अपनी खूबियों के खज़ाने

परमात्मा को आप पर है इतना नाज़
कि उनके दिल पर आप करती सदा राज

परमात्म प्यार से रहते आप सदा भरपूर
सर्व की चिंताओं को करते सहज दूर

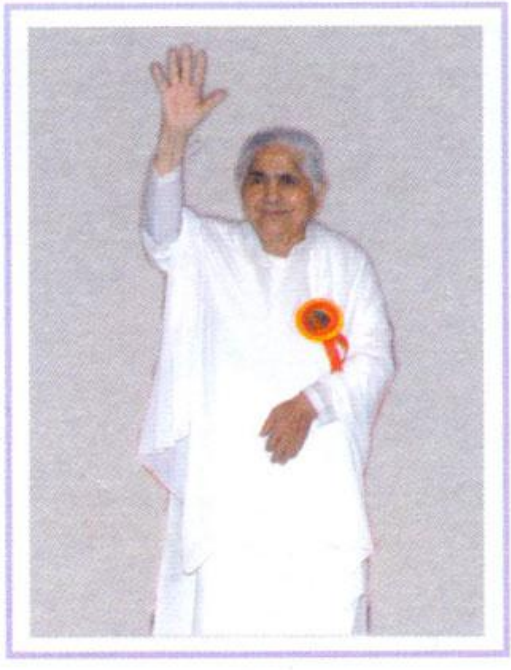

आप दृढ़ता की देवी, उमंग का फरिश्ता
सेवा में लगाई आपने अपनी हर विशेषता

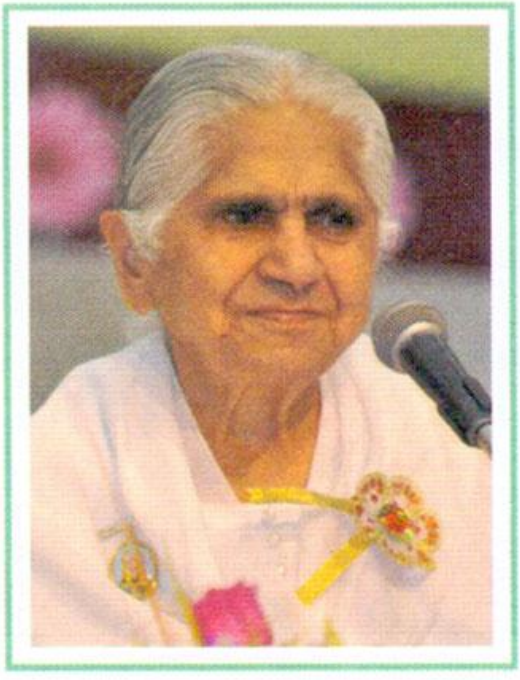

आपके अमृत वचनों से होता ये अहसास

कि वाणी के पीछे है गहन अनुभव और अभ्यास

आपके मुख से शब्द नहीं,
निकलते प्रभु वरदान हैं
परमात्म प्रेम का अनुभव कराती
आपकी रूहानी मुसकान है

सर्वशक्तियों का शृंगार, पवित्रता और प्यार

स्नेह का सिंधु सरस, आनन्द का अमृत कलश

लक्ष्य लिया जीवन में सेवाभाव और परोपकार

विश्व सेवाधारी बन शिव का संकल्प किया साकार

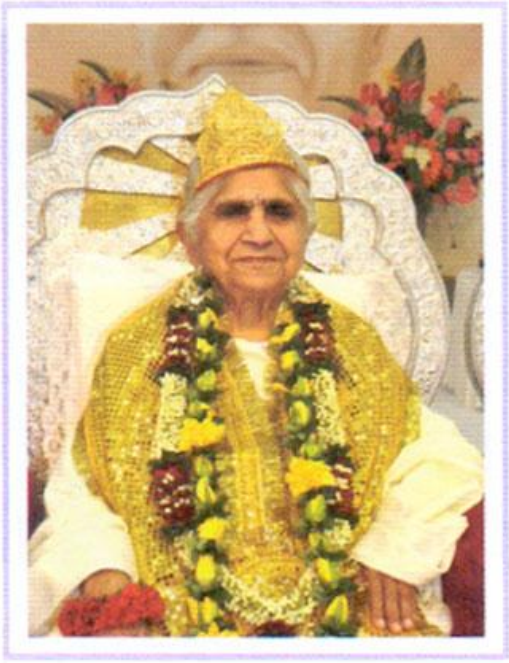

एक बल एक भरोसा निश्चय प्रभु पर इतना अचल

हर फिकर से फारिग आप निर्भय और निर्मल

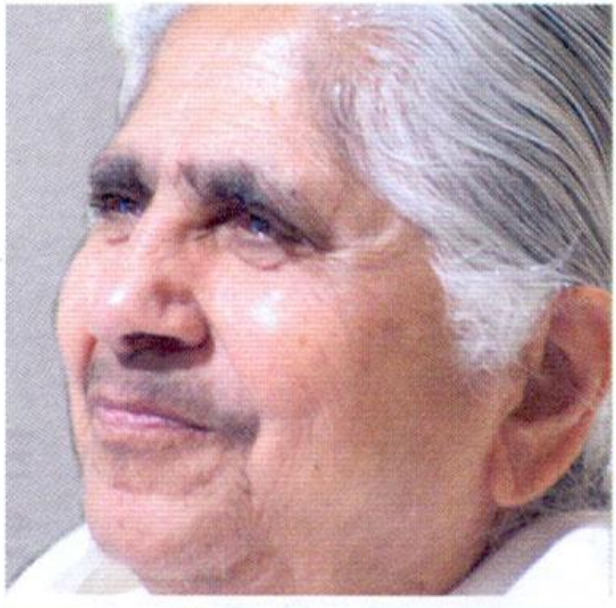

अंतर्मुखी मूरत, सौम्य सूरत
गुणों की खान, बापदादा की पहचान

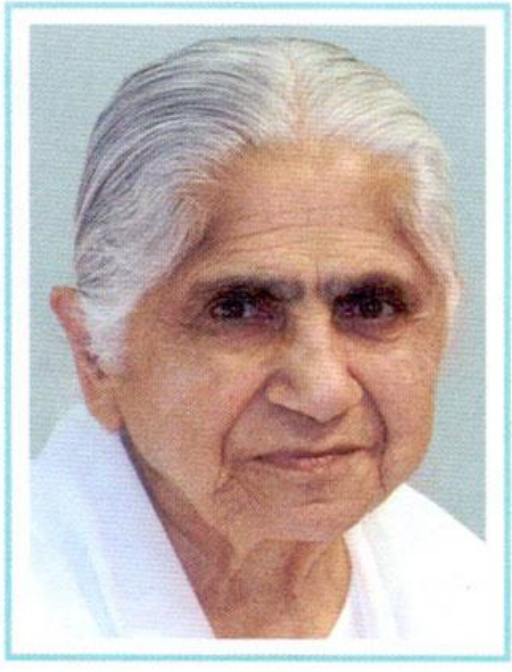

त्याग और तप का आप जैसे रोशन तारा
शान्ति और शुचिता का फैला रहे उजियारा

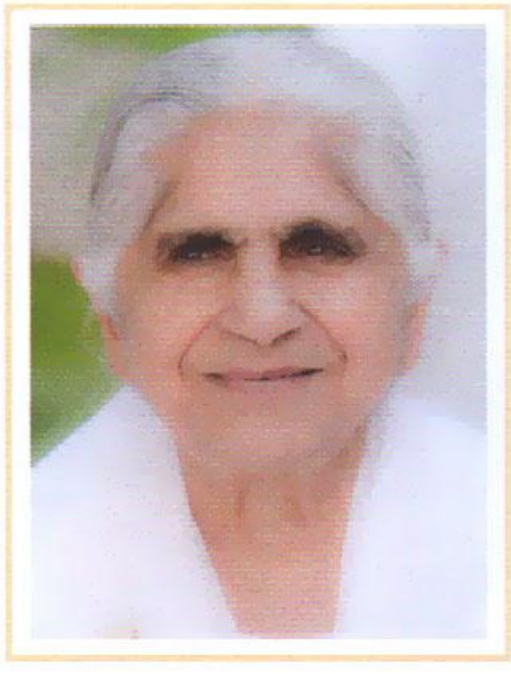

सरल, पवित्र निश्छल जैसे निर्मल गंगा बहती

कितनी मीठी कितनी प्यारी हमारी दादी जानकी

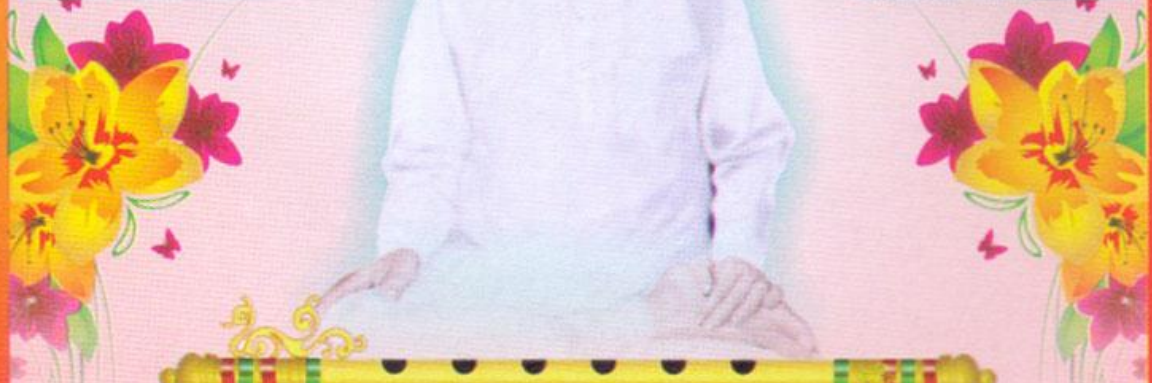

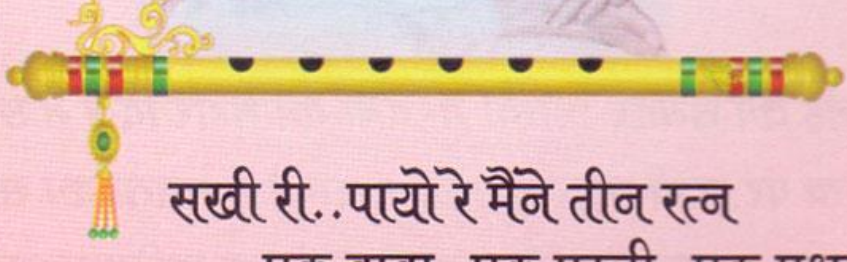

सखी री..पायो रे मैंने तीन रत्न
एक बाबा, एक मुरली, एक मधुबन

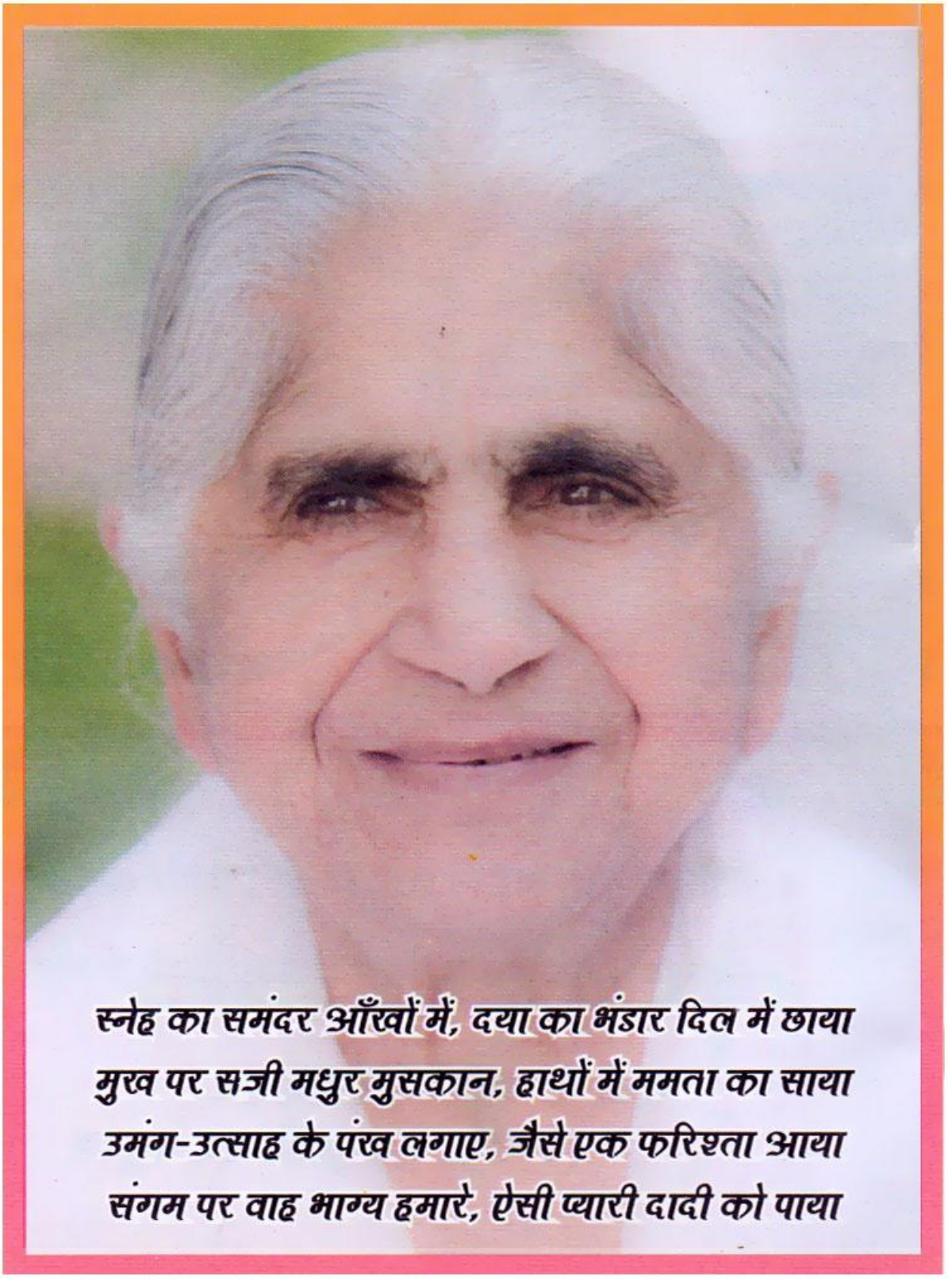

स्नेह का समंदर आँखों में, दया का भंडार दिल में छाया
मुख पर सजी मधुर मुसकान, हाथों में ममता का साया
उमंग-उत्साह के पंख लगाए, जैसे एक फरिश्ता आया
संगम पर वाह भाग्य हमारे, ऐसी प्यारी दादी को पाया

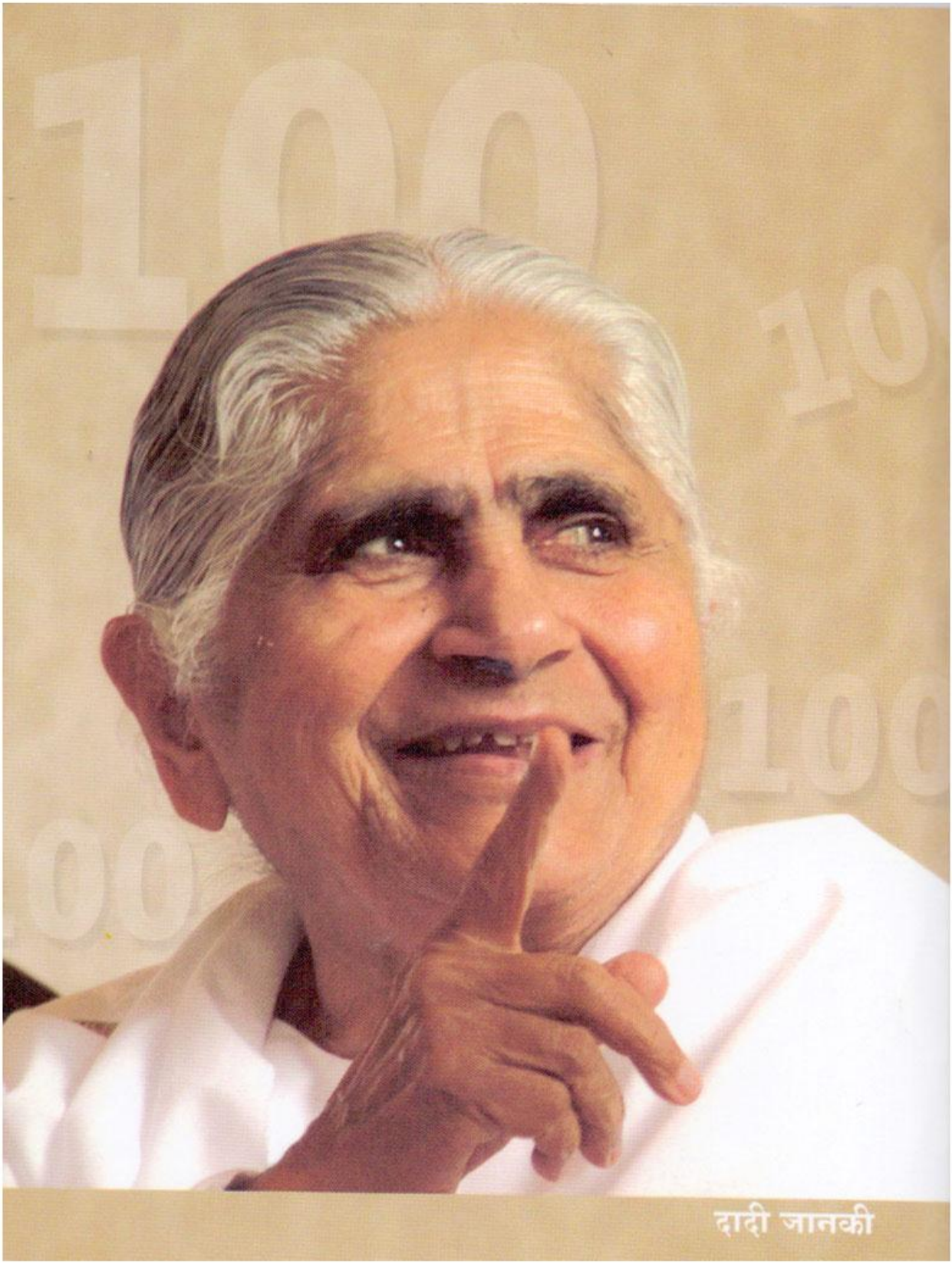
दादी जानकी